WWW.Kanchanujala.in

हिन्दी दैनिक

kanchanujala14@gmail.com

# कंचन उजाला

लखनऊ से प्रकाशित

सच्चाई के साथ

शाहरुख खान की कॉमिक ड्रामा में हुई आलिया भट्ट की सॉलिड एंट्री

वर्षः 01 अंक : 249 | लखनऊ, शनिवार, 29 अगस्त, 2020 | पृष्ठ- 6 | मूल्य - 1 रुपये

# कोरोना के रिकॉर्ड 77 हजार से अधिक नये मामले

## 60 हजार से अधिक हुए स्वस्थ

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** देश में कोरोना महामारी की लगातार विकराल होती स्थिति के बीच पिछले 24 घंटों के दौरान संक्रमण के सर्वाधिक 77 हजार से अधिक नये मामले सामने आये हालांकि राहत की बात यह रही कि इस दौरान 60 हजार से अधिक मरीज संक्रमणमुक्त भी हुए। केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से शुक्रवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक पिछले 24 घंटों में कोरोना संक्रमण के रिकॉर्ड 77,266 नये मामलों के साथ संक्रमितों का आंकड़ा 33,87,501 हो गया। इस दौरान 60,177 मरीज स्वस्थ हुए हैं जिससे कोरोना से मुक्ति पाने वालों की संख्या 25,83,948 हो गयी है। स्वस्थ होने वालों की तुलना में संक्रमण के नये मामले अधिक होने से सक्रिय मामले 16,032 बढ़कर 7,42,023 हो गये हैं। देश के केवल 11 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में इस दौरान मरीजों की संख्या कम हुई है तथा इस अवधि में 1,057 लोगों की मौत होने से मृतकों की संख्या 61,529 हो गयी। देश में सक्रिय मामले 21.90 प्रतिशत और रोगमुक्त होने वालों की दर 76.28 प्रतिशत है जबकि मृतकों की दर 1.82 प्रतिशत है। कोरोना से सबसे गंभीर रूप से प्रभावित महाराष्ट्र में सक्रिय मामलों की संख्या 5,366 बढ़कर 1,78,561 हो गयी तथा 355 लोगों की मौत होने से मृतकों का आंकड़ा 23,444 हो गया। इस दौरान 9,136 लोग संक्रमणमुक्त हुए जिससे स्वस्थ हुए लोगों की संख्या बढ़कर 5,31,563 हो गयी। देश में सर्वाधिक सक्रिय मामले इसी राज्य में हैं।

आंध्र प्रदेश में इस दौरान मरीजों की संख्या 2001 बढ़ने से सक्रिय मामले 94,209 हो गये। राज्य में अब तक 3,633 लोगों की मौत हुई है, वहीं कुल 2,95,248 लोग संक्रमणमुक्त हुए हैं। दक्षिणी राज्य कर्नाटक में पिछले 24 घंटों के दौरान मरीजों की संख्या में 1,379 की वृद्धि हुई है और यहां अब 85,006 सक्रिय मामले हैं। राज्य में मरने वालों का आंकड़ा 5,232 पर पहुंच गया है तथा अब तक 2,19,554 लोग स्वस्थ हुए हैं।

### प्रधानमंत्री जन धन योजना के तहत खुले 40 करोड़ से अधिक खाते

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** प्रधानमंत्री जन धन योजना के तहत देश में 40 करोड़ 35 लाख बैंक खाते खोले जा चुके हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को योजना के छह वर्ष पूरा होने पर कहा कि छह साल पहले आज के दिन इस महत्वाकांक्षी योजना का श्रीगणेश, जिन लोगों के बैंक में खाते नहीं हैं उन्हें यह सुविधा मुहैया कराने के लक्ष्य से किया गया था। सरकार की यह पहल कई गरीबी उन्मूलन की सेवाओं की नींव जमाने में %गेम चेंजर% साबित हुई और करोड़ों लोग इससे लाभान्वित हुए। श्री मोदी ने ग्राफिक्स के जरिये योजना के आंकड़े जारी किए। इनके अनुसार योजना के पहले वर्ष में 17.90 करोड़ खाते खोले गए और दूसरे साल आंकड़ा बढ़कर 25.10 करोड़ पर पहुंच गया। तीसरे वर्ष में तीस करोड़ को पारकर 30.09 और चौथे साल 32.54 करोड़ खाते योजना के तहत खुल चुके थे। पांचवे साल संख्या 36.79 और छह वर्ष पूरा होने पर 40 करोड़ को लांघकर 40.35 करोड़ हो गई। योजना के तहत कुल खुले खातों में 63.6 प्रतिशत ग्रामीण और 36.4 शहरी क्षेत्रों में खुले।

# योगी ने कोविड-19 की चेन को तोड़ने के लिए प्रयास जारी रखने के दिए निर्देश

**लखनऊ, संवाददाता।** उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कोविड-19 के संक्रमण की चेन को तोड़ने के लिए सभी प्रयास जारी रखने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि मेडिकल टेस्टिंग, विशेष रूप से रैपिड एन्टीजन टेस्ट की संख्या में वृद्धि की जाए। आर.टी.पी.सी.आर. मशीन से किए जाने वाले टेस्ट की संख्या भी बढ़ाई जाए। उन्होंने प्रदेश में प्रतिदिन 1 लाख 50 हजार कुल टेस्ट सुनिश्चित किए जाने के निर्देश देते हुए कहा कि इसके लिए आवश्यक मैनपावर की व्यवस्था की जाए। मुख्यमंत्री आज यहां लोक भवन में आहूत एक उच्च स्तरीय बैठक में अनलॉक व्यवस्था की समीक्षा कर रहे थे। सर्विलांस गतिविधियों में वृद्धि के निर्देश देते हुए उन्होंने कहा कि सर्विलांस कार्य को बढ़ाकर लोगों की जीवन रक्षा में उल्लेखनीय सफलता मिलेगी। उन्होंने कहा कि सर्विलांस को बेहतर करने के साथ ही, इंटीग्रेटेड कमाण्ड एण्ड कन्ट्रोल सेण्टर की व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाए। कॉन्टेक्ट ट्रेसिंग तथा डोर-टू-डोर सर्वे कार्य को भी सघन रूप से संचालित किया जाए। कोविड-19 के संक्रमण के प्रति व्यापक जागरूकता का प्रसार इस प्रकार किया जाए, जिससे संक्रमित लोग सामने आने से न घबराएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार नीट तथा जे0ई0ई0 परीक्षाओं के आयोजन का समर्थन करती है। विगत 9 अगस्त, 2020 को राज्य में बीएड की प्रवेश परीक्षा सम्पन्न हुई, जिसमें लगभग 5 लाख अभ्यर्थी थे। इस परीक्षा में कहीं से संक्रमण की कोई समस्या संज्ञान में नहीं आयी। इसी प्रकार लोक सेवा आयोग, उत्तर प्रदेश की परीक्षा भी सम्पन्न कराई गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोविड-19 से बचाव सम्बन्धी प्रोटोकॉल का पालन करते हुए सभी गतिविधियां प्रारम्भ होनी चाहिए। सरकारी कार्यालयों में अवकाश पर रहने वाले कार्मिकों तथा अस्वस्थ कार्मिकों को छोड़कर कार्यालय अवधि में प्रत्येक समय 50 प्रतिशत कर्मियों की उपस्थिति प्रत्येक दशा में रहनी चाहिए। उन्होंने समस्त अपर मुख्य सचिवों,प्रमुख सचिवों को अपने अधीनस्थ विभागाध्यक्ष कार्यालयों का निरीक्षण करने के निर्देश देते हुए कहा कि पूर्वान्ह 9:30 बजे अनुपस्थित पाए गए अधिकारियों,कर्मचारियों के विरुद्ध कार्यवाही की जाए।

# अंतिम वर्ष की परीक्षा दिए बिना छात्रों को डिग्री नहीं:सुप्रीमकोर्ट



**नयी दिल्ली, एजेंसी।** उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को राज्यों और विश्वविद्यालयों को दिए आदेश में कहा कि आगामी 30 सितम्बर तक अंतिम वर्ष की परीक्षा लिये बिना छात्रों को डिग्री नहीं दी जा सकेगी हालांकि राज्यों को यह सलाह दी गयी है कि वे परीक्षाओं की तिथि आगे बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से अनुरोध कर सकते हैं। न्यायमूर्ति अशोक भूषण की अध्यक्षता वाली न्यायमूर्ति आर सुभाष रेड्डी और न्यायमूर्ति एमआर शाह की पीठ ने मामले की सुनवाई के बाद हालांकि कहा कि आपदा प्रबंधन अधिनियम के तहत परीक्षा रद्द किये जाने संबंधी महाराष्ट्र सरकार का निर्णय प्रभावी होगा। महाधिवक्ता तुषार मेहता ने यूजीसी की ओर से कहा कि स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश प्रारंभ करने के वास्ते छात्रों के हित में यह निर्णय लिया गया है। यूजीसी ने कहा है कि कुछ राज्यों द्वारा परीक्षाएं रद्द किये जाने के निर्णय से उच्च शिक्षा के स्तर पर प्रत्यक्ष असर पड़ेगा। यूजीसी ने संशोधित दिशानिर्देश जारी किया है जिसमें कहा गया है कि अंतिम वर्ष की सभी परीक्षाएं कोविड-19 मानक परिचालन प्रक्रिया के तहत ली जायेगी। सर्वश्री अभिषेक मनु सिंघवी , श्याम दीवान और अरविंद दतार समेत वरिष्ठ वकीलों ने छात्रों की ओर से न्यायालय से अपील की कि कोरोना महामारी के प्रकोप के मद्देनजर अंतिम वर्ष की परीक्षाएं रद्द कर दी जानी चाहिए।

### कोरोना की वजह से नहीं रोके जा सकते बिहार विधानसभा चुनाव

**पटना, एजेंसी।** कोरोना काल में बिहार विधानसभा चुनाव पर रोक लगाने संबंधित याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में शुक्रवार को सुनवाई हुई। इसे खारिज करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि चुनाव करना निर्वाचन आयोग का काम है और कोर्ट इस मामले में हस्तक्षेप नहीं करेगा। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि निर्वाचन आयोग ने अभी चुनाव का नोटिफिकेशन भी जारी नहीं किया है। ऐसी स्थिति में अभी से कोई आकलन करना उचित नहीं होगा। निर्वाचन आयोग हर बात का ध्यान रख कर ही चुनाव का कार्यक्रम घोषित करेगा। न्यायाधीश अशोक भूषण, आर सुभाष रेड्डी और एमआर शाह की खंडपीठ में मामले की सुनवाई हुई। विदित हो कि याचिकाकर्ता ने अपनी लोकहित याचिका में अभी तक निर्वाचन आयोग की टीम के बिहार का दौरा नहीं करने को आधार बनाया गया था।

# जेईई-नीट परीक्षा पर छात्रों की बात सुने सरकार: सोनिया

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा सहित कई प्रमुख नेताओं ने कोरोना महामारी के बीच छात्रों की सुरक्षा के मद्देनजर संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) तथा राष्ट्रीय योग्यता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) स्थगित करने की मांग करते हुए कहा है कि सरकार को इस मुद्दे पर छात्रों से बातचीत कर उनकी सहमति के अनुसार ही निर्णय लेना चाहिए। श्रीमती गांधी ने इंजीनियरिंग तथा मेडिकल प्रवेश परीक्षा टालने के वास्ते केंद्र पर दबाव बनाने के लिए 'स्पीकअप फॉर स्टूडेंट्स' कार्यक्रम के तहत शुक्रवार को वीडियो जारी कर कहा बच्चे हमारा भविष्य है और कल के बेहतर भारत के निर्माण के लिए हम उन पर निर्भर हैं इसलिए उनके भविष्य को लेकर जो भी निर्णय लिया जाता है तो यह आवश्यक है कि इसमें उनकी सहमति हो। श्री राहुल गांधी ने कहा, यह महत्वपूर्ण है कि सरकार को छात्रों की बात सुननी चाहिए क्योंकि वे बुद्धिमान हैं और उनके दिलों में इस देश का हित बसता है इसलिए इन परीक्षाओं के संबंध में कोई भी निर्णय उनसे बातचीत और उनकी सहमति के आधार पर ही लिया जाना चाहिए। इससे पहले सुबह उन्होंने सरकार पर यह परीक्षा आयोजित कर छात्रों के जीवन के साथ खिलवाड़ करने का आरोप लगाया और कहा लाखों परेशान छात्रों के साथ अपनी आवाज़ जोड़िए। स्पीकअप फ़ॉर स्टूडेंट सेफ्टी आज 10 बजे से। आइए, सरकार से छात्रों की बात सुनने की माँग करें। श्रीमती वाड्रा ने कहा सरकार जेईई और नीट परीक्षा में शामिल होने वाले छात्रों और उनके माता-पिता की आवाज़ की अनदेखी नहीं कर सकती। वे हमारे देश का भविष्य हैं।महामारी के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए उन्हें इस तरह से संक्रमण की तरफ धकेलना क्या उचित है। क्या वे हमारे बच्चे भी नहीं हैं।

### मऊ में मुख्तार अंसारी गैंग के स्लॉटर हाउस पर चला योगी सरकार का बुलडोजर

**मऊ, एजेंसी।** यूपी के मऊ जिले में बंधा रोड के पास मुख्तार अंसारी गिरोह के संरक्षण में ग्रीन लैण्ड में बनाए गए अवैध स्लॉटर हाउस को शुक्रवार को जिला प्रशासन द्वारा ध्वस्त कर दिया गया। ध्वस्तीकरण की कार्रवाई सिटी मजिस्ट्रेट व क्षेत्राधिकारी के नेतृत्व में किया गया। अवैध ध्वस्तीकरण की कार्रवाई के दौरान पूरे दिन अफरा-तफरी मचा रहा। नगर क्षेत्राधिकारी जेएन सचान ने बताया कि एक माह पूर्व नोटिस देने के बाद भी अवैध निर्माण कर्ताओं द्वारा कोई भी जवाब नहीं देने के उपरांत जिलाधिकारी व न्यायालय के आदेश के अनुपालन में कार्रवाई किया गया। शहर कोतवाली अंतर्गत हृदय स्थली बंधा रोड के पास ग्रीन लैण्ड में मुख्तार अंसारी गिरोह के लोगों के संरक्षण में बिना नक्शा स्वीकृत कराए बनाए गए अवैध स्लॉटर हाउस को लेकर जिला प्रशासन द्वारा एक माह पूर्व नोटिस भेजा गया था।

### विश्व में 2.43 करोड़ से अधिक कोरोना संक्रमित

**वाशिंगटन /रियो डि जेनेरो /नयी दिल्ली, एजेंसी।** विश्व में वैश्विक महामारी कोरोना वायरस (कोविड-19) से संक्रमित होने वालों की संख्या तेजी से बढ़ती हुई 2.43 करोड़ के पार हो गयी है तथा इस महामारी की चपेट में आने से अब तक 8.30 लाख से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। अमेरिका की जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के विज्ञान एवं इंजीनियरिंग केन्द्र (सीएसएसई) की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार कोरोना से विश्वभर में अब तक 24,361,904 लोग संक्रमित हुए हैं और 830,205 लोगों की मौत हुई है। विश्व महाशक्ति माने जाने वाले अमेरिका में कोरोना से संक्रमित होने वालों की संख्या 58 लाख को पार कर 5,866,214 पर पहुंच गयी है तथा अब तक 180,214 लोगों की जान जा चुकी है। विश्व में कोरोना से दूसरे नंबर पर सबसे अधिक प्रभावित ब्राजील में अब तक 3,761,391 लोग इसकी चपेट में आ चुके हैं।

## कश्मीर में एनकाउंटर

# शोपियां में सुरक्षाबलों ने 4 आतंकियों को मार गिराया, एक को पकड़ा

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** जम्मू-कश्मीर के शोपियां के किलूरा इलाके में सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ जारी है। आर्मी के जवानों ने चार आतंकवादियों को मार गिराया है। वहीं, एक को पकड़ लिया है। सेना ने बताया कि आतंकियों के पास से दो एके-47 और तीन पिस्टल बरामद की गई हैं। यहां पिछले 2 हफ्तों में अब तक 10 दहशतगर्द मारे गए। पुलिस ने बताया कि मारे गए आतंकियों में से दो की पहचान हो गई। एक आतंकी शकूर पर्रे अल बद्र संगठन से जुड़ा था। वहीं, दूसरा आतंकी सुहैल भट्ट है। भट्ट ने पिछले दिनों खानमोह के सरपंच का अपहरण कर हत्या कर दी थी। 17 और 18 अगस्त को बारामूला के करीरी इलाके में मुठभेड़ हुई थीं। इस दौरान 3 आतंकवादियों को सुरक्षाबलों ने ढेर किया था। इनमें लश्कर के दो कमांडर सज्जाद उर्फ हैदर और उस्मान शामिल हैं। हैदर बांदीपोरा हत्याओं का मुख्य साजिशकर्ता है। वह युवाओं को आतंकी संगठन में भर्ती करता था। कश्मीर आईजीपी विजय कुमार ने बताया था कि विदेशी आतंकी उस्मान ने भाजपा नेता वसीम बारी, उसके पिता और भाई की हत्या की थी। दक्षिण कश्मीर के शोपियां में 19 अगस्त को सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच दो मुठभेड़ हुई थीं।

### दिल्लीवालों को बड़ी राहत इस बार भी नहीं बढ़ीं बिजली की दरें

**नई दिल्ली, एजेंसी।** कोरोना काल में दिल्लीवालों के लिए एक बड़ी राहत भरी खबर सामने आई है। उम्मीद की जा रही थी कि राजधानी में जल्द ही बिजली की दरें बढ़ सकती हैं, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। दिल्ली विद्युत विनियामक आयोग द्वारा इस संबंध में शुक्रवार को बुलाई गई बैठक में वित्त वर्ष 2020-21 के लिए बिजली की दरें बढ़ाने को लेकर सहमति नहीं बन सकी और बिजली दरें पूर्व की तरह ही रखने का फैसला किया गया। हालांकि, इस बार बिजली बिल में पेंशन सरचार्ज में 1.20 फीसदी की बढ़ोतरी की गई है। पहले यह सरचार्ज 3.80 फीसदी था जो अब बढ़कर 5 फीसदी हो गया है। डीईआरसी की इस बैठक में दिल्ली में बिजली सप्लाई करने वाली बीवाईपीएल, बीआरपीएल, टीपीडीडीएल और एनडीएमसी और दिल्ली सरकार के अधिकारी शामिल हुए।

# दस सितम्बर को राफेल औपचारिक तौर पर शामिल होगा वायु सेना में

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** भारतीय वायु सेना के लिए तुरूप का इक्का बताये जा रहे लड़ाकू विमान राफेल को आगामी 10 सितम्बर को वायु सेना में औपचारिक तौर पर शामिल किया जायेगा। फ्रांस से खरीदे गये इन विमानों की पहली खेप पिछले महीने ही भारत आयी थी। सूत्रों के अनुसार इन पांचों लड़ाकू विमानों को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और फ्रांसीसी रक्षा मंत्री फलोरेंस पार्ले की मौजूदगी में हरियाणा के अंबाला स्थित वायु सेना स्टेशन में एक समारोह में वायु सेना के बेड़े में शामिल किया जायेगा। वायु सेना के एक अधिकारी ने बताया कि राफेल विमानों को वायु सेना के बेड़े में औपचारिक तौर पर शामिल करने के लिए 10 सितम्बर की तारीख का प्रस्ताव किया गया है लेकिन अभी रक्षा मंत्री के कार्यालय ने इस अनुरोध के बारे में कोई जवाब नहीं दिया है। लड़ाकू विमानों की कमी का सामना कर रही वायु सेना ने 59 हजार करोड़ रूपये की लागत से फ्रांस से 36 लड़ाकू विमान खरीद का सौदा किया है। इनमे से पांच विमान गत 29 जुलाई को भारत आये थे और चार विमानों की अगली खेप के अक्टूबर में आने की संभावना है। पाकिस्तान और चीन सीमा पर एक साथ दो मोर्चों पर अभियान के लिए वायु सेना के पास राफेल जैसे विमान की बेहद अधिक जरूरत बतायी जा रही है।

# राष्ट्रपति पहली बार वर्चुअल माध्यम से देंगे खेल रत्न और अर्जुन अवार्ड

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद देश का सर्वोच्च खेल सम्मान राजीव गांधी खेल रत्न, अर्जुन पुरस्कार, द्रोणाचार्य पुरस्कार और आजीवन ध्यानचंद पुरस्कार शनिवार को खेल दिवस के दिन राष्ट्रीय खेल पुरस्कारों के इतिहास में पहली बार राष्ट्रपति भवन से वर्चुअल समारोह के जरिये प्रदान करेंगे। राष्ट्रपति इस साल पांच खिलाड़ियों को खेल रत्न, 27 खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार, 13 कोचों को द्रोणाचार्य पुरस्कार और 15 खिलाड़ियों को आजीवन उपलब्धि के लिए ध्यानचंद पुरस्कार वर्चुअल माध्यम से प्रदान करेंगे। इसके अलावा आठ लोगों को तेनजिंग नोर्गे राष्ट्रीय साहस पुरस्कार, पांच संस्थानों को राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार और पंजाब यूनीवर्सिटी चंडीगढ़ को मौलाना अबुल कलाम आजाद (माका) ट्रॉफी प्रदान की जायेगी। भारत के सीमित ओवरों के कप्तान रोहित शर्मा, स्टार महिला पहलवान विनेश फोगाट, टेबल टेनिस स्टार मणिका बत्रा, महिला हॉकी टीम की कप्तान रानी रामपाल और रियो पैरालम्पिक के स्वर्ण पदक विजेता एथलीट मरियप्पन थंगावेलु को खेल रत्न से नवाजा जाएगा। खेल रत्न के इतिहास में यह पहला मौका है जब पांच खिलाड़ियों को खेल रत्न प्रदान किया जाएगा। इससे पहले 2016 के रियो ओलम्पिक के बाद चार खिलाड़ियों रजत पदक विजेता बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू, कांस्य विजेता महिला पहलवान साक्षी मलिक, चौथे स्थान पर रही जिम्नास्ट दीपा कर्माकर और निशानेबाज जीतू राय को खेल रत्न सम्मान दिया गया था। रोहित ने पिछले साल इंग्लैंड में हुए एकदिवसीय विश्व कप में पांच शतक बनाने का विश्व रिकॉर्ड बनाया था। वह सचिन तेंदुलकर, महेंद्र सिंह धोनी और विराट कोहली के बाद यह सम्मान पाने वाले चौथे क्रिकेटर बनेंगे। विनेश ने 2018 में हुए राष्ट्रमंडल और एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीते थे। विनेश ने पिछले साल विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीतकर टोक्यो ओलम्पिक के लिए देश को कोटा दिलाया था। मणिका बत्रा ने 2018 के राष्ट्रमंडल खेलों में महिला व्यक्तिगत और टीम स्वर्ण सहित कुल चार पदक जीते थे। उन्होंने 2018 में जकार्ता एशियाई खेलों में मिश्रित युगल में कांस्य पदक जीता था।

### प्रधानमंत्री मोदी ने की शिंजो आबे के जल्द स्वस्थ होने की कामना

**नई दिल्ली, एजेंसी।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे के खराब स्वास्थ्य पर दुःख जताते हुए कहा कि उनके बुद्धिमता पूर्ण नेतृत्व और निजी प्रतिबद्धता के कारण भारत-जापान की साझेदारी पहले से कहीं अधिक गहरी और मजबूत हुई है। जापान के सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री बने रहने वाले आबे ने आज कहा था कि वह सेहत संबंधी एक गंभीर समस्या के दोबारा उभरने के बाद पद छोड़ना चाहते हैं। पीएम मोदी ने ट्वीट किया, मेरे प्रिय मित्र शिंजो आबे, आपकी खराब सेहत के बारे में जानकर दुःख हुआ। पिछले कुछ साल में आपके बुद्धिमता पूर्ण नेतृत्व और निजी प्रतिबद्धता की वजह से भारत-जापान साझेदारी पहले से कहीं अधिक गहरी और मजबूत हो गयी है।

# मॉनसून सत्र से पहले सभी सांसदों का होगा कोरोना टेस्ट: लोकसभा स्पीकर

**नई दिल्ली, एजेंसी।** संसद के मॉनसून सत्र की शुरुआत होने से पहले सभी सांसदों का कोरोना टेस्ट कराया जाएगा। यह जानकारी शुक्रवार को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने दी। सांसदों को आरटी-पीसीआर परीक्षण से गुजरना होगा, जिसमें उनके नाक / गले से स्वैब लिया जाएगा। लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने कहा कि कोरोना वायरस ने दुनियाभर में लोकतांत्रिक संस्थानों के कामकाज के लिए एक बड़ी चुनौती पेश की है। हमें उम्मीद है कि सदस्य कोविड-19 संबंधित दिशानिर्देशों का पालन करते हुए मॉनसून सत्र के सुचारू संचालन में सहयोग करेंगे। बिरला ने कहा कि सांसदों के अलावा मंत्रालय के अधिकारियों, मीडिया के प्रतिनिधियों, सांसदों के परिवारवालों, लोकसभा और राज्यसभा सचिवालय के कर्मचारियों सहित संसद भवन परिसर में प्रवेश करने की संभावना वाले सभी लोगों सत्र शुरू होने से पहले कोरोना वायरस संबंधी जांच कराना होगा। कोविड-19 के मद्देनजर संसद के आगामी मॉनसून सत्र की तैयारियों को अंतिम रूप देने के लिये दोनों सदनों के अधिकारियों, स्वास्थ्य मंत्रालय, डीआरडीओ तथा अन्य एजेंसियों के अधिकारियों के साथ बैठक की। इस बैठक में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के निदेशक डॉ. रणदीप गुलेरिया, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के महानिदेशक बलराम भार्गव, स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण एवं अन्य अधिकारी मौजूद थे। बैठक के बाद बिरला ने कहा कि दोनों सदनों (राज्यसभा और लोकसभा) में बैठने की व्यवस्था कोविड-19 के मद्देनजर स्वास्थ्य मंत्रालय के दिशानिर्देशों के अनुरूप होगी । सत्र आयोजित करने के लिये व्यापक व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि सत्र के दौरान बिना छुए सुरक्षा जांच (जिरो टच) करने की व्यवस्था की जा रही है। हिन्दुस्तान टाइम्स के अनुसार, संसद का आगामी मॉनसून सत्र 10 सितंबर से शुरू हो सकता है। कोविड-19 महामारी के बीच होने वाली इस बैठक में उचित दूरी का पालन सुनिश्चित करने के लिए दोनों सदनों की अलग-अलग बैठकें और सांसदों के लिए बड़े डिस्प्ले वाली स्क्रीन सहित अन्य व्यवस्थाएं की जा रही हैं।

लखनऊ मे रूक रूक कर हुई हल्की वर्षा से रूमी गेट के समीप रोड पर भरा पानी।

# जेईई-नीट परीक्षा स्थगित करने की मांग के लिए आप कार्यकर्ता ने किया प्रदर्शन



**लखनऊ, संवाददाता।** कोरोना काल में केंद्र सरकार द्वारा प्रस्तावित जेईई-नीट प्रवेश परीक्षा के विरोध में सपा, कांग्रेस के बाद अब आम आदमी पार्टी ने भी मोर्चा खोल दिया है। कोरोना काल में केंद्र सरकार की प्रस्तावित जेईई-नीट प्रवेश परीक्षा के विरोध में आम आदमी पार्टी के प्रदेश यूथ विंग ने हनुमान सेतु के पास जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। यूथ विंग कार्यकर्ताओं ने परीक्षा स्थगित कराने की मांग को लेकर नारेबाजी करते प्रदर्शन किया। इस दौरान भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने बल प्रयोग भी किया। जिसके चलते आप कार्यकर्ताओ को चोटें भी आई। आप कार्यकर्ता भैंसा कुंड तक पैदल मार्च निकालने का प्रयास कर रहे थे। यहां पर विरोध प्रदर्शन कर रहे आप कार्यकर्ताओं का कहना था, कि कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के समय परीक्षा कराना अभ्यर्थियों के लिए बहुत ही कठिन और खतरनाक साबित हो सकता है। नीट और जेईई की परीक्षा कराने को लेकर विरोध प्रदर्शन कर रहे प्रदर्शन के दौरान पुलिस और आप कार्यकर्ताओं में झड़प हई। मोके मौजुद पुलिस ने कार्यकर्ताओं से अर्थी छीन ली जुससे आक्रोशित कार्यकर्ता सड़क पर ही बैठ गए और शिक्षा मंत्री मुर्दाबाद के नारे लगाने लगे। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया। विरोध प्रदर्शन के दौरान आप यूथ विंग के प्रदेश अध्यक्ष फैसल वारसी ने कहा कि हमारी पार्टी सरकार को बताना चाहती है कि देश में कोरोना की स्थिति फिलहाल सामान्य नहीं है। आंकड़ों पर गौर करें, तो देश कोरोना महामारी से प्रभावित देशों की सूची में तीसरे नंबर पर पहुंच गया है। साथ ही प्रदेश का ज्यादातर हिस्सा बाढ़ से प्रभावित है। ऐसे हालात में परीक्षा कराना छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ करना होगा। केंद्र की भाजपा सरकार देश के भविष्य के भविष्य से खिलवाड़ कर रही है, जिसे आम आदमी पार्टी बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि देश का बहुत बड़ा हिस्सा बाढ़ से प्रभावित है। अभ्यर्थियों का परीक्षा केंद्र तक पहुचना बहुत मुश्किल है और वहां तक पहुचने के लिए उन्हें कई हजार रुपये खर्च करने पड़ रहे है। इधर, आप के राज्यसभा सांसद व यूपी प्रभारी संजय सिंह ने टवी्ट कर भाजपा सरकार से सवाल किया कि पिछले 24 घंटों में दुनिया में सबसे ज्यादा कोरोना केस भारत में रिकॉर्ड किए गए। यह आंकड़ा 75,000 से ज्यादा है। इसके बाद भी केंद्र सरकार लाखों छात्रों को परीक्षा में झोंककर उनकी जान क्यों लेना चाहती है। परीक्षा से ज्यादा बच्चों की जान जरूरी है। कुछ समय पूर्व, आप के राज्य सभा सांसद व यूपी प्रभारी संजय सिंह ने, केंद्रीय मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक को पत्र लिखकर इस परीक्षा को स्थगित कर आगे बढ़ाने का अनुरोध किया था।

# राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के वरिष्ठ पदाधिकारियों की बैठक संपन्न

## चरणबद्ध कार्यक्रम के माध्यम से सरकार तक पहुंचाई जाएगी कर्मचारियों की आवाज

**लखनऊ, संवाददाता।** राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के वरिष्ठ पदाधिकारियों की एक महत्वपूर्ण बैठक लखनऊ में संपन्न हुई। बैठक में उपस्थित पदाधिकारियों ने सोशल डिस्टेंसिंग का पूरा अनुपालन किया। सभी पदाधिकारी मास्क लगाए हुए एवं सैनिटाइजर का प्रयोग कर रहे थे। बैठक की अध्यक्षता परिषद के अध्यक्ष जे एन तिवारी ने किया। बैठक की कार्यवाही का विवरण देते हुए जे एन तिवारी ने एक प्रेस विज्ञप्ति में अवगत कराया है कि प्रदेश में कोविड-19 की लड़ाई को कर्मचारी कमजोर नहीं पड़ने देंगे। कर्मचारियों ने कोरोना को प्रदेश से भगाने का संकल्प लिया। इसके लिए शासन द्वारा समय-समय पर जारी किए गए सभी निर्देशों का कर्मचारी अक्षरशः पालन करेंगे। कर्मचारियों की जायज मांगों पर कोरोना संकटकाल में कार्यवाही नहीं होने पर पदाधिकारियों ने चिंता जताई। बैठक में निर्णय लिया गया कि राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के माध्यम से कर्मचारियों की मांगों पर कॉविड 19 के दिशा निर्देशों के अंतर्गत शासन को अवगत कराया जाएगा। बैठक में चरणबद्ध जागरूकता कार्यक्रम भी घोषित किया गया ,जिसके अंतर्गत 21 सितंबर 2020 से 20 अक्टूबर 2020 तक मुख्य सचिव ,अपर मुख्य सचिव कार्मिक को पोस्टकार्ड भेजकर कर्मचारियों की मांगों पर कार्यवाही का अनुरोध किया जाएगा। 21 अक्टूबर 2020 से 20 नवंबर 2020 तक सोशल मीडिया, व्हाट्सएप ग्रुप, ट्विटर, इंस्टाग्राम, ईमेल के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाएगा। 23 नवंबर से 20 दिसंबर 2020 तक संयुक्त परिषद के वरिष्ठ पदाधिकारियों द्वारा मंडलीय सम्मेलन आयोजित करके कर्मचारियों को जागरूक किया जाएगा। 27 दिसंबर 2020 लखनऊ में एक सांकेतिक धरना प्रदर्शन का आयोजन कर मांगों का ज्ञापन शासन को भेजा जाएगा। कर्मचारियों की मांगों में संविदा ,आउट सोर्स कर्मचारियों का मानदेय बढ़ाया जाना ,उनको नियमित किया जाना ,नगर प्रतिकर भत्ता एवं अन्य सुविधाओं की तरफ शासन,प्रशासन का ध्यान आकर्षित किया जाना ,जेम पोर्टल की कार्यवाही को समय बद्ध कराया जाना ,कर्मचारियों की समस्याओं के निस्तारण के लिए कार्मिक विभाग में अलग पोर्टल विकसित किया जाना, भारत सरकार के आदेश दिनांक 17.2.2020 एवं 11.6.2020 की व्यवस्था प्रदेश में भी लागू कराया जाना, कोविड 19 पर प्रभावी नियंत्रण के लिए रिक्त पदों को भरा जाना, सभी कार्यालयों में अनिवार्य रूप से हेल्प डेस्क सक्रिय किया जाना, बवअपक-19 के नियंत्रण तक कर्मचारियों के खिलाफ शुरू की जा रही प्रशासनिक कार्यवाही को स्थगित रखा जाना एवं सरकारी विभागों के निजी करण प्रस्ताव पर सरकार को पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया जाना प्रमुख हैं।

## सद्ज्ञान व्यक्ति को नर से नारायण बना सकता हैः उमानंद शर्मा

**लखनऊ, संवाददाता।** गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ के विचार क्रान्ति ज्ञान यज्ञ अभियान के अन्तर्गत विश्ववार्ता के विश्व धर्म चौनल के केन्द्रीय पुस्तकालय में गायत्री परिवार के संस्थापक युगऋषि पं0 श्री राम शर्मा आचार्य द्वारा रचित सम्पूर्ण 79 खण्डों का वांड़मय साहित्य की स्थापित किया गया। उपरोक्त यह वाड्मय साहित्य गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट, गायत्री ज्ञान मंदिर इन्दिरा नगर के सक्रिय कार्यकर्ता देवेन्द्र सिंह उनकी धर्मपत्नी स्व0 शशि गंगवार ने अपने पूज्य माता एवं साथ स्व0 शांति देवी की स्मृति में संस्थान के पुस्तकालय एवं सभी पत्रकारों को एक-एक अखण्ड ज्योति पत्रिक भेंट की। इस अवसर पर वाड्मय स्थापना अभियान के मुख्य संयोजक उमानंद शर्मा वाड्मय साहित्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सद्ज्ञान व्यक्ति को नर से नारायण बना सकता है। ज्ञान यज्ञ अभियान में सभी जीवित जाग्रत आत्माओं को इसमें भागीदारी करनी चाहिये, जिसमें समाज में सद्ज्ञान का प्रकाश फैल सके। श्री शर्मा ने बताया यह ऋषि साहित्य राजभवन, विधानसभा, सचिवालय प्रशासन, आई.आई.एम., पी.जी.आई., के.जी.एम.यू. और लखनऊ विश्वव्धिलय, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, अमर उजाला, एन.बी.टी., हिन्दुस्तान टाइम्स, मुस्लिम विश्वव्धिलय नदवा, गुरूद्वारा, कैथलिक चर्च, प्रबन्ध तकनीकी संस्थानों के पुस्तकालयों सहित अबतक 333वाँ वाड्मय स्थापना की जा चुकी है आज 334वाँ है। हमारा संकल्प है 501 स्थानों पर वाड्मय स्थापना कराने का है। विश्ववार्ता दैनिक समाचार पत्र, विश्ववार्ता पोर्टल, विश्ववार्ता मासिक पत्रिका, विश्ववार्ता न्यूज चौनल, विश्ववार्ता का विश्व धर्म चौनल के प्रधान संपादक श्री आशोक पाण्डेय जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि ऋषि साहित्य, एक जीवन दर्शन है हमारे सम्मानित विश्ववार्ता ग्रुप के पत्रकार बन्धु इस ऋषि साहित्य का स्वाध्याय करें अपने इस जीवन को, अपने परिवार को उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसारित करें।

## कोविड टेस्ट के फोटो लीक एफआईआर, कार्यवाही की मांग

**लखनऊ, संवाददाता।** आईपीएस अफसर अमिताभ ठाकुर ने अपने व अपने परिवार के कोविड टेस्ट से संबंधित फोटो व रिपोर्ट लीक होने के संबंध में एफआईआर व प्रशासनिक कार्यवाही की मांग की है, थाना गोमतीनगर को भेजी शिकायत में अमिताभ ने कहा कि कल कोविड टेस्ट टीम ने टेस्ट के दौरान उन लोगों के फोटो लिए और बताया कि कोविड पॉजिटिव हो तो 24-48 घंटे में कमांड सेण्टर से बताया जायेगा, कोविड नेगेटिव होने पर फोन नहीं आयेगा, खुद सीएमओ लखनऊ कार्यालय से मालूम करना होगा. शाम 07.13 च्ड पर ट्वीटर हैंडल ेीनासंरपप तथा /च्तलंहतॅसम से ट्वीट हुआ कि उनमें कोई कोविड पॉजिटिव नही आया है. साथ ही अमिताभ की पत्नी डॉ नूतन ठाकुर तथा दोनों बच्चों के टेस्ट के समय के फोटो भी पोस्ट किये थे,अमिताभ ने कहा कि टेस्ट टीम द्वारा रिकार्ड हेतु लिया गया फोटो किसी भी स्थिति में गैर-सरकारी व्यक्ति को लीक नहीं किया जा सकता है और यह निजता के हनन के साथ गंभीर आपराधिक कार्य भी है. साथ ही बिना अनुमति के इन निजी फोटो का सार्वजनिक होना भी गैर-कानूनी है, जिससे उनके बच्चे विशेषकर बहुत आहत एवं परेशान हैं. अतः उन्होंने इसके संबंध में एफआईआर की मांग की हैं उन्होंने मुख्य सचिव को शिकायत भेज कर उनके घर के अन्दर मेडिकल टेस्ट के दौरान लिए गए फोटो के लीक करने के संबंध में जाँच कर कार्यवाही करने की मांग भी की हैं

## मॉर्निंग वॉक पर निकले अधिवक्ता व उनकी पत्नी को अज्ञात वाहन ने कुचला, मौत

**लखनऊ, संवाददाता।** राजधानी लखनऊ में शुक्रवार की सुबह टहलने निकलने अधिवक्ता व उनकी पत्नी की तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने कुचल दिया। हादसे के बाद घायलों को ट्रामा सेंटर ले जाया गया। लेकिन रास्ते में ही दोनों की मौत हो चुकी थी। यह हादसा सुशांत गोल्फसिटी इलाके में खुर्दही बाजार पेट्रोल पंप के सामने का है। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और अज्ञात वाहन की तलाश के लिए पेट्रोल पंप के आस-पास लगे सीसीटीवी को खंगाला जा रहा है। गोसाईगंज कोतवाली क्षेत्र के खुर्दही बाजार निवासी अधिवक्ता शीतला प्रसाद (50) शुक्रवार तड़के पत्नी मालती देवी (46) के साथ मॉर्निंग वॉक पर निकले थे। सुशांत गोल्फसिटी के पास सुबह 6 बजे आस-पास अज्ञात वाहन ने पीछे से टक्कर मारी और कुचलते आगे निकल गई। राहगीरों की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल दंपती को ट्रामा सेंटर पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। पुलिस की अब तक कि जांच में पता चला है कि, अज्ञात कार ऑल्टो थी, जो कि लखनऊ की बताई जा रही है। पुलिस टीम कार की पहचान के लिए सीसीटीवी कैमरे खगांल रही है। गोसाईगंज इंस्पेक्टर सचिन त्रिपाठी ने बताया मृतक वकील रोज सुबह पत्नी के साथ मॉर्निंग वॉक पर जाते थे। कार और उसके चालक की तलाश की जा रही है। जल्द ही आरोपी को पकड़ लिया जाएगा।

## भाजपा ने किये क्षेत्रीय अध्यक्ष घोषित

**लखनऊ, संवाददाता।** भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा की सहमति से पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने क्षेत्रीय अध्यक्षों की घोषणा की है। मोहित बेनीवाल को पश्चिम क्षेत्र, रजनीकान्त महेश्वरी को ब्रज क्षेत्र, मानवेन्द्र सिंह को कानपुर क्षेत्र, शेषनारायण मिश्रा को अवध क्षेत्र, महेश श्रीवास्तव को काशी क्षेत्र व धर्मेन्द्र सिंह सैंथवार को गोरखपुर क्षेत्र का क्षेत्रीय अध्यक्ष घोषित किया गया है।

## हिन्दू महासभा उत्तर प्रदेश के प्रवक्ता बने पंकज तिवारी

**लखनऊ, संवाददाता।** शहर के समाजसेवी पंकज तिवारी को अखिल भारत हिन्दू महासभा, उत्तर प्रदेश का प्रवक्ता नियुक्त किया गया है। आज यहां पार्टी के प्रदेश प्रभारी ऋषि त्रिवेदी ने जानकारी दी। पंकज तिवारी को प्रवक्ता नियुक्त नियुक्त किये जाने पर पार्टी के प्रदेश महामंत्री अनुपम मिश्रा सहित कई वरिष्ठ पदाधिकारियों ने बधाई दी है। श्री त्रिवेदी ने बताया कि नवनियुक्त प्रवक्ता पंकज तिवारी इससे पहले वर्ष 1994-95 में पार्टी की युवा इकाई के लखनऊ महानगर के अध्यक्ष रह चुके हैं।

## बच्चों के भविष्य पर मजे लेना छोड पानी बचायेंः बेंकटेस दत्ता

**लखनऊ, संवाददाता।** अपने बच्चों के भविष्य पर मजे लेना छोड पानी के संचयन के लिए आगे आये, इस कथन के साथ कार्यशाला में उपस्थिति प्रतिभागियों को वर्षा जल संचयन पर तकनीकि जानकारी देते हुए डाक्टर बेंकटेस दत्ता, एशोसियट प्रोफेशर, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ ने कहा कि हम जितना पानी बरबाद करेंगे उतना ही बच्चों का भविष्य खतरें में डाल रहें है। हमारी पृथ्वी का 70 प्रतिशत हिस्सा पानी है, उपलब्ध 100 प्रतिशत पानी में से 97 प्रतिशत पानी खारा व 3 प्रतिशत पानी पीने योग्य है। उस 3 प्रतिशत में 2 प्रतिशत बर्फ के रूप में है। जो 1 प्रतिशत पानी बचता है उसपर मानव, वन्य जीव और पेड पौधे निर्भर है। पीने योग्य,भू-जल इतना कम होने के बावजूद हम पानी बचाने पर विचार नही कर रहें है। पुराने समय में बरसात के पानी को हम तालाबों में व नदियों में बांध,चेक डैम बनाकर खेती के लिए इस्तेमाल करते थे। लेकिन आज हम ऐसा नही कर रहें है। हम तालाबों को समाप्त करते जा रहें है, जिससे बरसात का पानी नदियों एवं नालों के माध्यम से समुद्र में जाकर खारा हो रहा है। हम लोग लगभग 80 प्रतिशत खेती में भूजल का इस्तेमाल कर रहें है, साथ ही घरेलू उपयोग के लिए भी आवश्यकता से अधिक भूजल का दोहन कर रहें है यदि ऐसे ही चलता रहा तो आने वाले समय में पेयजल को लेकर गम्भीर समस्या होने वाली है, जिससे हमारे बच्चों का भविष्य संकट में आ जायेगा। विभिन्न प्रारूपों पर विस्तार से बताते हुए शिशिर चन्द्रा, कार्यक्रम समन्वयक वाटर एड ने कहा कि वर्षा जल संचयन और पानी की बचत करना हमारी मानसिकता में ही नही है अभी हम सोच ही नही पा रहें कि पानी हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है।

# मुख्य सचिव ने किया आयुक्त एवं निबंधक सहकारिता मुख्यालय का औचक निरीक्षण

## अनुपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विरुद्ध की जायेगी सख्त कार्यवाईः मुख्य सचिव

**लखनऊ, संवाददाता।** मुख्य सचिव राजेन्द्र कुमार तिवारी द्वारा सहकारिता भवन स्थित आयुक्त एवं निबंधक सहकारिता मुख्यालय का आकस्मिक एवं औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण में कोई भी अधिकारी उपस्थित नहीं मिला। करीब 90 प्रतिशत कर्मचारी भी अनुपस्थित मिले। उन्होंने कहा कि कार्यालय समय में अधिकांश अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अनुपस्थित होना यह दर्शाता है कि कार्यालय में अनुशासनहीनता है एवं प्रशासनिक नियंत्रण का अभाव है, जिसके लिये उत्तरदायित्व निर्धारित किया जायेगा तथा अनुपस्थित पाये गये अधिकारियों एवं कर्मचारियों के वेतन कटौती के साथ-साथ विभागीय कार्यवाही अलग से की जायेगी। उन्होंने बताया कि शासन के स्पष्ट निर्देश हैं कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी समयशीलता एवं अनुशासन का पालन करें तथा संवेदनशीलता के साथ जनता की समस्याओं को सुनकर उनका तत्परता से निस्तारण करें। मुख्य सचिव राजेन्द्र कुमार तिवारी प्रातः 9.40 बजे सहकारिता भवन में रिसेप्शन पर पहुंचे जहां पर कोई भी उपस्थित नहीं मिला। तत्पश्चात उन्होंने पूरे कार्यालय का निरीक्षण किया। निरीक्षण में अपर आयुक्त एवं अपर निबंधक शिवेन्द्र कुमार, अपर आयुक्त एवं अपर निबंधक कृपाशंकर, अपर आयुक्त एवं अपर निबंधक आलोक सिंह, अपर आयुक्त एवं अपर निबंधक आर0के0सिंह, वित्तीय सलाहकार पी0के0अग्रवाल, उप आयुक्त एवं उप निबंधक आर0के0कुलश्रेष्ठ, उप आयुक्त एवं उप निबंधक अशोक कुमार, सहायक आयुक्त श्रद्धा अनंग, सहायक आयुक्त अभय सिंह, सहायक आयुक्त मोहसिन, सहायक निबंधक स्वाती अग्रवाल, सहायक आयुक्त रामसागर, सहायक लेखाधिकारी गीता पुष्कर, लेखाधिकारी राजेन्द्र सिंह नेगी अनुपस्थित मिले। निरीक्षण में स्थापना अनुभाग 'क' में मात्र विनय अस्थाना, राजकुमार व संतोष कुमार, स्थापना अनुभाग 'ग' में केवल कनिष्ठ सहायक उमेश एवं सहयोगी ब्रजपाल उपस्थित मिले। स्थापना अनुभाग 'ख' में सभी कर्मी अनुपस्थित मिले। लेखा अनुभाग में विजय कुमार, रामबालक वर्मा, राजेन्द्र सिंह, लेखाकार अतुल चन्द्रा, लेखाकार प्रभाकर त्रिपाठी, सहयोगी विकास कुमार सिंह के अलावा सभी अनुपस्थित मिले। इसके अतिरिक्त विभिन्न अनुभागों के निरीक्षण में ए0डी0ओ0 रामशंकर गुप्ता, कनिष्ठ सहायक मनीष, प्रधान सहायक संजय श्रीवास्तव एवं सहयोगी रामसुमन को छोड़कर अन्य सभी कर्मी अनुपस्थित मिले। बकाया अनुभाग में मात्र रामिला डेविड, प्रमोद कुमार व मनीष कुमार उपस्थित मिले। ऋय विक्रय अनुभाग, शिक्षा अनुभाग, विकास अनुभाग में नीलम उपाध्याय एवं अनुज कुमार को छोड़कर अन्य कर्मी अनुपस्थित पाये गये। चपरासी दिनेश मेज के ऊपर बैठकर फोन पर बात करते हुये मिले, जिस पर मुख्य सचिव ने उसे कड़ी फटकार लगाई। उपभोक्ता एवं जन सूचना अनुभाग में कोई भी कर्मी उपस्थित नहीं मिला। मुख्य सचिव ने कार्यालय के अधिकांश अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अनुपस्थिति पर अप्रसन्नता व्यक्त करते हुये वेतन कटौती के साथ-साथ विभागीय कार्यवाही करने तथा अनुशासनहीनता व शिथिल नियंत्रण के लिये उत्तरदायित्व निर्धारित करने के निर्देश दिये।

# लॉकडाउन में आर्थिक बदहाली का सामना कर रहे बुनकरों की मदद करे योगी सरकारःप्रियंका गांधी



**लखनऊ, संवाददाता।** कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने उत्तर प्रदेश की योगी सरकार को याद दिलाया है कि लॉकडाउन में आर्थिक बदहाली का सामना कर रहे बुनकरों की बिजली माफी के लिये उनके द्वारा लिखे गये पत्र का अब तक कोई संज्ञान नहीं लिया गया है। वाड्रा ने शुक्रवार को ट्वीट किया '' मैंने 13 मई को यूपी सरकार को पत्र लिखकर बुनकरों का बिजली बिल माफ करने व लॉकडाउन से उपजे संकट में मदद के लिए प्रत्येक बुनकर परिवार को 12000 रु प्रतिमाह देने का निवेदन किया था। बुनकरों की बुरी हालत को देखते हुए सरकार को तुरंत ये कदम उठाने चाहिए ताकि इस कला को बचाया जा सके। गौरतलब है कि श्रीमती वाड्रा ने पत्र लिखा था कि कोरोना महामारी से जनजीवन प्रभावित है। हर वर्ग के ऊपर भयंकर आर्थिक मार पड़ी है। किसान, गरीब और मजदूर वर्ग विकट स्थिति में पहुँच गए हैं। आर्थिक संकट ने मध्य वर्ग और सामान्य नौकरीपेशा लोगों को भी अपनी चपेट में ले लिया है। कारोबारी और व्यापारी वर्ग के ऊपर अस्तित्व बचाने का संकट खड़ा हो गया है। इन वर्गों की मदद करना अनिवार्य हो गया है। उन्होंने कहा कि लाकडाउन में छोटे उद्योग, दस्तकारी, बुनकरी और कुटीर उद्योग बुरी तरह प्रभावित हुआ है। छोटे और मंझोले उद्योग उप्र की आर्थिक रीढ़ हैं। लाखों परिवारों की रोजी-रोटी इनसे जुड़ी हुई है। आज ये भयंकर दबाव में हैं। माँग और आपूर्ति पूरी तरह से ठप्प है। मुख्यमंत्री से गुजारिश है कि छोटे मंझोलों उद्योगों का बैंक लोन माफ किया जाए। लोन माफी के फैसले से ये दिवालिया होने से बच जाएँगे। इनके बिजली के बकाया बिलों पर भी उदारतापूर्वक विचार कर उन्हें राहत देने की घोषणा की जाए।

प्रदेश में एक बड़ी आबादी बुनकरी से जुड़ी हुई है। इस महामारी में उनका पूरा कारोबार चौपट हो गया है। बुनकरों को तत्काल राहत पहुंचाने की जरूरत है। बुनकरों के बिजली के बिल माफ किया जाए और प्रत्येक बुनकर परिवार को प्रतिमाह 12 हजार रुपया क्षतिपूर्ति राशि दिया जाए। इसी तरह कालीन कारोबारियों और कारीगरों को आर्थिक मदद की सख्त जरूरत है। इनके बैंक कर्ज माफकिये जाएं।

## कैंन्ट के कन्टेन्टमेंट जोन में चल रही है कोचिंग क्लासेज

**लखनऊ, संवाददाता।** कोविड के चलते एक तरफ जब सारे स्कूल-कालेज बन्द है, वही आगामी होने वाली परीक्षाओं के कारण कुछ कोचिंग संस्थान चोरी छिपे बच्चों को पढ़ा रहे है। इस प्रकार का मामला सदर कैन्ट के कन्टेन्टमेंट जोन का है। जहां सदर की अग्रवाल धर्मशाला के बगल में स्थित कोचिंग संस्थान पिछले एक सप्ताह से अपने विद्यार्थियों को बुला रहा है और बाकायदा पढाई करवा रहा है। तीसरी मंजिल पर स्थित कम्प्यूटर संस्थान व कोचिंग सेन्टर पर वर्तमान में बी0काम0 तृतीय वर्ष के बच्चों की पढाई चल रही है। लखनऊ विश्वविद्यालय के कामर्स संकाय के प्रोफेसर यहां कामर्स के तृतीय वर्ष के बच्चों को पढ़ा रहे है। ज्ञात हो कि प्रथम और द्वितीय वर्ष या सेमेस्टर के विद्यार्थियों को तो उत्तीर्ण कर दिया गया था। परन्तु तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों की परीक्षा होनी है।

# जिला विद्यालय निरीक्षक के कार्यालय के समक्ष कांग्रेस का प्रदर्शन

**लखनऊ, संवाददाता।** कोविड-19 महामारी के मद्देनजर अभिभावकों की बड़ी संख्या में मांग के बावजूद केन्द्र सरकार जबरन जेईई-नीट परीक्षा करने पर आमादा होने के निर्णय के विरोध में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आवाह्न पर आयोजित राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शन के तहत जिला,शहर कांग्रेस कमेटी लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में आज जिला विद्यालय निरीक्षक के कार्यालय के समक्ष जोरदार प्रदर्शन किया गया। विरोध प्रदर्शन के उपरान्त जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष वेद प्रकाश त्रिपाठी एवं शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मुकेश सिंह चौहान द्वारा जिला विद्यालय निरीक्षक को महामहिम राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा गया। शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मुकेश सिंह चौहान ने कहा कि आज सरकार के इस निर्णय से छात्र एवं अभिभावकों के मन में भय का माहौल व्याप्त है। महामारी के इस दौर में जब कि यातायात एवं होटल आदि की व्यवस्था सुचारू रूप से उपलब्ध नहीं हो पा रही है छात्रों को परीक्षा देने में मानसिक तनाव का सामना करना पड़ रहा है। जिला,शहर कांग्रेस कमेटी के संयुक्त तत्वावधान में दिये गये ज्ञापन में मांग की गयी कि वर्तमान समय में देश में प्रतिदिन लगभग 75000 से अधिक कोरोना संक्रमण के मामले सामने आ रहे हैं और देश में 34 लाख से अधिक कोरोना के मामले सामने आ चुके हैं ऐसे में श्रम्म-छम्म्ज् की परीक्षाओं में भारी संख्या में बच्चों के इकट्ठा होने से उनमें संक्रण फैलने की सम्भावना है।

इसलिए इसे तत्काल प्रभाव से स्थगित किया जाये, बच्चों की सुरक्षा एवं कई सौ किमी0 दूर परीक्षा केन्द्र होने के नाते परीक्षा देने हेतु आने वाले बच्चों को वर्तमान समय में परिवहन के साधन एवं रहने-खाने आदि की व्यवस्था करने में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, ऐसी स्थिति में इन परीक्षाओं को आगे बढ़ाया जाये एवं जब तक महामारी का प्रकोप समाप्त न हो जाये, तब तक परीक्षा न करायी जाये।चौहान ने बताया कि अ0भा0 कांग्रेस कमेटी के आवाह्न पर सोशल मीडिया के माध्यम से जिलाध्शहर कांग्रेस कमेटी लखनऊ के पदाधिकारियों एवं कांग्रेसजनों द्वारा 'चमांन्चथ्वतैजनकमदजैंमिजल' के माध्यम से छात्रों की सुरक्षा को लेकर अपनी आवाज बढ़-चढ़ कर उठायी। इस अवसर पर पूर्व विधायक श्याम किशोर शुक्ला, उ0प्र0 कांग्रेस कमेटी के लखनऊ प्रभारी सचिव रमेश शुक्ला, किसान कांग्रेस मध्य जोन के अध्यक्ष श्री तरूण पटेल, पार्षद मो0 हलीम, पार्षद शनाज अबरार, डा0 शहजाद आलम, आर0बी0 सिंह, के0के0 आनन्द, इस्लाम अली, रईस अहमद, संजय कश्यप, मुरली मनोहर, आनन्द गुप्ता, श्याम बिहारी पाण्डेय, मो0 शुएब चॉद, अजय वर्मा, माता प्रसाद, अकिंत सक्सेना, अयूब सिद्दीकी, अतिउर्रहमान, इरशाद, प्रणव त्रिपाठी, रैथिन चक्रवर्ती, अकबर खान, अमन बाल्मीकि, अतुल बाल्मीकि आदि कांग्रेस नेता मौजूद थे।

# लगातार नौ वर्षो से हो रहे श्रीगणेश महोत्सव को लगा कोरोना का ग्रहण

**➲ हर्षोल्लासपूर्वक गणेशोत्सव न होने से श्रद्धालुओं में छायी रही मायूसी**

**➲ परम्परा बरकरार रखने के लिए भक्तो ने घर पर स्थापित की प्रतिमा**

**धाता, फ्तेहपुर ।** गणेश चतुर्थी के अवसर पर कस्बे में विगत 09 वर्षो से लगातार हो रहे विशाल गणेश महोत्सव को लगा इस बार कोरोना काल का ग्रहण लग गया। धूमधाम से मनाए जाने वाले गणेशोत्सव का आयोजन ना हो पाने के कारण सभी भक्तों में मायूसी छायी रही।

ज्ञात हो कि धाता कस्बे के राम जानकी मंदिर, रावण मैदान में विगत 09 वर्षो से लगातार विशाल गणेश महोत्सव का आयोजन होता चला आ रहा है। गणेश महोत्सव के मुख्य आयोजक शिवम केशरवानी (सेठ जी) ने बताया कि शासन की गाइडलाइन व भक्तों की सुरक्षा की वजह से इस बार विशाल गणेशोत्सव का आयोजन होना संभव नहीं है, लेकिन विगत 09 वर्षो से चली आ रही गणेश पूजन की परंपरा को बरकरार रखते हुए अपने आवास में भगवान श्री गणेश की प्रतिमा को विराजमान करके पूरे हर्षोल्लास के साथ गणेश चतुर्थी का त्योहार मनाया जा रहा है। वो भगवान श्री गणेश से प्रार्थना करेंगे कि जल्द ही हम सबको इस कोरोना नामक महामारी से निजात मिले।

विशाल गणेशोत्सव के सह आयोजक उत्कर्ष जायसवाल, नितिन मोदनवाल, अंकित केशरवानी व रिषभ केशरवानी ने बताया की गणेश महोत्सव के दौरान अष्टमी की रात्रि को प्रयाग से आए कलाकारों द्वारा विशाल रात्रि जागरण (आर्केस्ट्रा) कार्यक्रम का आयोजन भी कराया जाता है, लेकिन इस बार गणेश महोत्सव का आयोजन संभव ना हो पाने के कारण हम लोग बहुत निराश हैं। इस मौके पर जय श्री गणेश युवा समिति के अध्यक्ष शिवम केश, उत्कर्ष जाय, सुनील केश, अभिषेक देववंशी, अंकित केश, शिवम, अंकुर, विनय, पवन जायसवाल, रोशन जायसवाल, धीरेन्द्र, राकेश केशरवानी, अरुण केशरवानी आदि भक्तगणों ने बप्पा के दरबार में माथा टेककर देश दुनिया से कोरोना खत्म होने के लिए आशीर्वाद माँगा।

# जनसभा स्थल का जल्द निर्माण करायेगी पालिकाः रजा

**फ्तेहपुर ।** नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष प्रतिनिधि हाजी रजा ने बताया कि किसी भी राजनीतिक दल/स्वयंसेवी संस्थाओं/समाजसेवियों को अपनी आवाज को जनमानस पहुंचाने हेतु जनसभा रैली करने के लिए भटकना नहीं पड़ेगा। जैसा कि प्रायः देखा गया है कि जनसभा करने हेतु बड़ा मैदान ना होने के कारण जगह का चयन नहीं हो पाता तथा मैदान के चयन के लिए काफी कठिनाई होती है। इसको देखते हुए नगर पालिका परिषद बोर्ड ने एक स्थान चयन कर उसमें सभा हेतु 02 फ्लोर का मंच हेलीकॉप्टर उतारने हेतु हेलीपैड तथा पार्किंग की सुविधा के साथ मैदान का सौंदर्यीकरण किया जाएगा। जिसको शीघ्र ही अमलीजामा पहुँचाने हेतु बोर्ड के समक्ष रखा जाएगा। अध्यक्ष प्रतिनिधि ने बताया कि शहर में चुनाव के वक्त व आम जनमानस की समस्या की आवाज को बुलंद करने हेतु कोई भी ऐसा निर्धारित स्थान नहीं है जिस पर समाजसेवी या राजनीतिक दल काफी संख्या में भीड़ को एकत्र कर जनसभा कर सकते हैं। इसको देखते हुए पालिका ने यह निर्णय लिया है कम से कम 15 से 20 बीघा जमीन पर मैदान का सौंदर्यीकरण कराया जाए। जहां पर मंच के साथ साथ पार्किंग की सुविधा हो। किसी भी पार्टी को सभा करने के साथ-साथ आम जनमानस अपने निजी कार्यक्रम करने के लिए शुल्क जमा कर नियमानुसार मैदान को ले सकते हैं इसके लिए पालिका द्वारा निर्धारित शर्तों को पूरा करना होगा।

## युवक ने नाबालिग युवती को किया फरार

**पीड़ित पिता ने पुलिस अधीक्षक से लगाई न्याय की गुहार**

**फ्तेहपुर।** चांदपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पंचायत औंरा निस्पी निवासी एक व्यक्ति की नाबालिग पुत्री को कानपुर जनपद के महाराजपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत कटरी गौशाला निवासी गोवर्धन पुत्र रामकिशुन नाम के युवक ने पिछली 13 अगस्त को घर से शौच जाने के पश्चात फरार कर दिया। पीड़ित पिता से मिली जानकारी के अनुसार लड़की पूर्ण रूप से नाबालिग थी जिसके चलते पीड़ित पिता ने स्थानीय फ्तेहपुर जनपद के थाना चांदपुर में रिपोर्ट दर्ज करवाई। आज लगभग 15 दिन पूरे होते आ रहे हैं और थानाध्यक्ष की कोई कार्यवाही ना होने पर पीड़ित पिता ने पुलिस अधीक्षक प्रशांत वर्मा से गुहार लगाई है। पुलिस अधीक्षक ने शिकायतकर्ता पीड़ा सुनने के बाद निस्तारण का आश्वासन दिया।

## चोरी के इरादे से छत पर चढ़े युवक को ग्रामीणों ने दौड़ाया

**बिन्दकी, फ्तेहपुर ।** चोरी के इरादे से घर की छत में चढ़े युवक को ग्रामीणों ने खदेड़ दिया। युवक मौके से भाग निकला। लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। गांव पहुंची पुलिस को ग्रामीणों ने आरोपी युवक को पकड़कर सौंप दिया। पुलिस पूरे मामले की छानबीन कर रही है। जानकारी के अनुसार कोतवाली क्षेत्र के घरवा गांव में रात में गांव के ही एक युवक छत चढ़ गया तभी घर के लोगों की अचानक नींद खुली तो आरोपी युवक को दौड़ाकर खदेड़ लिया। आरोपी युवक मौके से भाग निकला। ग्रामीणों ने इसकी सूचना पुलिस को दी पुलिस रात में ही गांव पहुंची। उधर ग्रामीणों ने आरोपी युवक को पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस पूरे मामले की छानबीन कर रही है। गृह स्वामी रमेश पटेल ने बताया कि गांव का युवक घर की छत में चढ़ गया जब लोगों की नींद खुली तो युवा को दौड़ा लिया। युवक मौके से भाग निकला। पुलिस को सूचना दी गई। बाद में आरोपी युवक को पकड़कर पुलिस को सौंप दिया गया है।

## बस की टक्कर से बाइक सवार गंभीर हुआ घायल

**बाराबंकी।** कोतवाली रामनगर के अंतर्गत ग्राम सुरवारी के सामने लखनऊ गोण्डा राष्ट्रीय राजमार्ग पर रोडवेज बस की टक्कर से मोटर साइकिल सवार दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गये। प्राप्त जानकारी के अनुसार आलमबाग डिपो की यूपी 70 ई टी 7333 जो गोण्डा की तरफ से आ रही थी वही बाराबंकी से दो पहिया वाहन से वापस आ रहे इंद्रमणि उपाध्याय पुत्र अशोक उपाध्याय उम्र लगभग 27 वर्ष व रोहन उपाध्याय पुत्र संत कुमार उपाध्याय उम्र लगभग 20 वर्ष निवासी रामनगर जो अपने घर वापस आ रहे थे। तभी ग्राम सुरवारी के सामने रोडवेज बस से उनकी जोरदार टक्कर हो गई। जिसमें दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए है। सूचना पाकर मौके पर पहुंचे परिजनों ने निजी वाहन से आनन-फानन में घायलों को उपचार हेतु जनपद की ओर ले गए। घटनास्थल पर पहुंचे पुलिस क्षेत्राधिकारी दिनेश कुमार दुबे व प्रभारी निरीक्षक राम चंद्र सरोज ने आवश्यक लिखा पढ़ी कर वाहन को थाने भेज दिया है। इस मौके पर उपनिरीक्षक कन्हैया कुमार, विश्व बंधु, अंजेय सिंह, कांस्टेबल विनय वर्मा, मधु भारती आदि पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

## आज फिर मिले 23 कोरोना संक्रमित

**फ्तेहपुर ।** कोरोना वायरस संक्रमितो की रिपोर्ट में पिछले 24 घण्टे के दौरान जनपद में 23 और संक्रमितो की पुष्टि हुई है। जनपद में कोरोना के ऐक्टिव केस 236 हो गये हैं। वहीं स्वस्थ्य होने वालों की संख्या 811 है। कुल कोरोना संक्रमितों की संख्या 1161 हो चुकी है।

## ट्रक की टक्कर से बाइक से गिरकर युवती की मौत

**खागा, फ्तेहपुर ।** कोतवाली क्षेत्र की चौकी महिचा मंदिर के समीप नेशनल मार्ग में ट्रक ने बाइक सवार को टक्कर मार दिया। जिससे बाइक में सवार एक युवती की गिरने से मौके पर मौत हो गयी।मौत की खबर सुनते ही परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजवा दिया।तथा ट्रक व चालक को हिरासत में ले लिया। जानकारी के अनुसार तहसील बिन्दकी क्षेत्र के देहुली गांव निवासी रामसजीवन की 15 वर्षीय पुत्री मोहिनी अपने चाचा शिवकुमार एवं भाई भूरे विश्वकर्मा के साथ बाइक से कडा धाम में झाड़-फूंक कराने हेतु जाते समय खागा तहसील क्षेत्र की महिचा मंदिर चौकी के समीप नेशनल मार्ग में ट्रक की टक्कर से बाइक में सवार युवती के गिर जाने से मौके पर मौत हो गयी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजवा दिया। बताया जाता है कि युवती अपने चाचा व भाई के साथ मोटरसाइकिल से कडा धाम किसी मजार में झाड़-फूंक के उद्देश्य से जा रहे थे। और जैसे ही खागा क्षेत्र के महिचा चौकी के समीप पहुंचे कि ट्रक की टक्कर लग गई जिससे बाइक से गिरते ही मौके पर मौत हो गई। वही चौकी इंचार्ज विवेक सिंह ने बताया कि सूचना पर घटनास्थल पर पहुंच गए और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया तथा ट्रक सहित चालक को कब्जे में ले लिया गया है।

## मार्ग दुर्घटना में बाइक सवार वृद्धा की मौत

**फ्तेहपुर ।** सदर कोतवाली क्षेत्र के जेल रोड़ में देर शाम ट्रक की चपेट में आ जाने से बाइक सवार 60 वर्षीय वृद्धा की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गयी। जानकारी के अनुसार थरियांव थाना क्षेत्र के ग्राम सनगांव निवासी छोटेलाल की पत्नी सुखरानी उर्फ कलावती अपने पुत्र रामलखन के साथ शहर क्षेत्र के बुलट चौराहा अपने रिश्तेदारी में आई थी। देर शाम लगभग सात बजे वापस गांव जाते समय बाइक जैसे ही जेल रोड़ पर पहुंची तभी पीछे से आ रहे ट्रक ने बाइक में टक्कर मार दिया। जिससे वृद्धा रोड पर गिर गयी और ट्रक उसके ऊपर से निकल गया। जिससे वृद्धा की घटना स्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गयी। हादसे के बाद चालक ट्रक सहित भाग जाने में सफल रहा। सूचना पाकर पुलिस ने अपने कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेजा है।

## फांसी लगा महिला ने दी जान

**फ्तेहपुर ।** ललौली थाना क्षेत्र के ग्राम तपनी में गुरूवार की शाम चारा लेने के बहाने जंगल गयी 45 वर्षीय महिला ने पेड़ से फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। जानकारी के अनुसार तपनी गांव निवासी रामराज की पत्नी रानी देवी का कल दोपहर अपने परिजनों में किसी बात को लेकर कहासुनी हो गयी थी। जिस पर शाम पांच बजे वह चारा लेने के बहाने घर से निकली और जंगल चली गयी तथा बबूल के पेड़ में फांसी का फंदा डाल फांसी पर लटक गयी। काफी देर बीत जाने पर जब महिला घर वापस नही आयी तो परिजनों ने उसकी खोजबीन शुरू कर दी। करीब दो घण्टे के बाद परिजनों ने बबूल के पेड़ से लटका रानी देवी का शव देखा जिसे देखते ही परिजनों में कोहराम मच गया। वहीं सूचना पाकर पुलिस ने घटना स्थल पर पहुंची शव को अपने कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया है।

## युवती ने खाया जहर

**फ्तेहपुर ।** थरियांव थाना क्षेत्र के ग्राम करणपुर में शुक्रवार की सुबह घरेलू कलह के चलते एक लगभग 35 वर्षीय महिला ने जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया। जिसे उपचार के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। जानकारी के अनुसार करणपुर गांव निवासी धर्मेन्द्र की पत्नी गुडिया देवी का आज सुबह अपने पति से किसी बात को लेकर कहासुनी हो गयी। जिससे क्षुब्ध होकर उसने जहर खा लिया। कुछ समय बाद जब उसकी हालत बिगडने लगी तो परिजनों ने उसे तत्काल उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती करा दिया। जहां चिकित्सक के अनुसार उसकी हालत में सुधार है।

## जिला मुख्यालय से तहसील स्तर पर परीक्षा सेंटर बनाएं जाने की छात्र-छात्राओं ने की मांग

**छात्र छात्राओं की मांग पर विधायक ने लिखा सीएम को पत्र**

**आगामी एक सितम्बर से चालू होने वाले D.El.Ed की परीक्षा केन्द्र को लेकर तहसील स्तर पर बनाए जाने हेतु त्योंथर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत छात्र-छात्राओं की मांग पर विधायक श्यामलाल द्विवेदी ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को पत्र लिखा। कोरोना काल में परीक्षा केन्द्र तहसील स्तर पर बनाए जाने की माग की।**

**चाकघाट/ रीवा।** कोरोना काल में आगामी एक सितम्बर से चालू होने वाले D.El.Ed की परीक्षा पर त्योंथर क्षेत्र के सोहागी कालेज ऑफ एजुकेशन के दर्जनों छात्र-छात्राओं ने परीक्षा सेंटर को लेकर तहसील कार्यालय में पहुंचकर जमकर नारेबाजी करते हुए अपना विरोध जताया हैं। उपस्थित छात्र-छात्राओं ने सचिव माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल के नाम का ज्ञापन त्योंथर तहसीलदार बी.डी. नामदेव को सौंपकर समस्या से अवगत कराते हुए परीक्षा सेंटर को तहसील स्तर पर रखें जाने की मांग की है। छात्र-छात्राओं ने ज्ञापन को लेकर मीडिया को जानकारी देते हुए बताया कि कोरोना काल में उत्पन्न विभिन्न प्रकार की समस्याओं के कारण तहसील से लगभग 100 किलोमीटर दूर रीवा में बनाए गये परीक्षा सेंटर को तहसील स्तर पर ही रखा जाए ताकि परिवहन सेवा, कोरोना का भय व ठहरने सहित भोजन और तमाम प्रकार की होने वाली समस्याओं एवं कठिनाइयों से बचा जा सकें। छात्र-छात्राओं ने मांग पूरी ना होने पर उग्र आंदोलन व समूहिक रूप से परीक्षा का बहिष्कार किये जाने की भी चेतावनी दी हैं। वहीं छात्र-छात्राओं ने रीवा सांसद व त्योंथर के विधायक के नाम का ज्ञापन सांसद प्रतिनिधि सुशील चन्द्र शुक्ला(बच्चा) को सौंपकर समस्या से अवगत कराया है, जिसपर सांसद प्रतिनिधि ने समस्या पर निराकरण हेतु बात कही है। इस दौरान छात्र संघ अध्यक्ष ज्योति त्रिपाठी, रोशनी सोनी, अर्चना, प्रियंका, सूरज, विकास, प्रकाश, प्रकुल, नवीन, रोशन, उपेन्द्र, राधेश्याम सहित कई छात्र-छात्राएं उपस्थित रहें।

# दबंगो ने पत्रकार को पीटा पुलिस प्रशासन है बेखबर

**फ्तेहपुर ।** शहर के देवीगंज क्षेत्र में निवास कर रहे मान्यता प्राप्त इलेक्ट्रॉनिक चैनल के पत्रकार विनीत त्रिपाठी पुत्र देवेंद्र त्रिपाठी को विगत 24 अगस्त की शाम चंद गुंडों ने किसी बात को लेकर नाहक पीट दिया। मामला कुछ दिन पहले का है जब अवैध कार्य कर रहे दबंगों का कवरेज पत्रकार ने करना चाहा, परंतु अपनी चाल में सफल होकर भाग निकले।

विगत 24 अगस्त की शाम मीडिया कर्मी अपने निजी काम से राधानगर चौकी की तरफ जा रहा था तभी केयूवी गाड़ी में सवार अनुभव तिवारी सहित कई नशे में धुत दबंग गाड़ी से उतरकर पत्रकार के साथ मारपीट शुरू कर दी। आनन फानन जान बचाकर पत्रकार वहां से भागा और राधा नगर चौकी पर तहरीर देनी चाही, परंतु चौकी इंचार्ज संगम लाल प्रजापति की ना मौजूदगी में देर रात तक बैठा रहा। चैनल के कई अधिकारियों से संपर्क करके कोतवाली थाना क्षेत्र में रिपोर्ट दर्ज कराई, परंतु अभी तक इस मामले में कोई कार्यवाही नहीं हुई। चैनल के कार्यभार को समूचे जनपद में देख रहे जनपद के वरिष्ठ संवाददाता शोभित शुक्ला से पीड़ित पत्रकार ने संपर्क किया, परंतु उन्होंने भी पदोन्नति को लेकर खींचातानी बताकर मामले में हस्तक्षेप करने से साफ इनकार कर दिया।

विश्वस्त सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार संवाददाता विनीत त्रिपाठी ने वर्तमान में फ्तेहपुर के उत्कृष्ट एवं कर्मठशील ब्यूरो चीफ से संपर्क करना चाहा तो उन्होंने भी संवाददाता की कॉल स्वीकार करना बंद कर दिया। विगत एक सप्ताह गुजरने के पश्चात भी जनपद में गुंडाराज कायम होना एक संशय की बात है। जहां पर देश का चौथा स्तंभ भी सुरक्षित नहीं दिखाई दे रहा। अभी तक प्रशासन की कोई कार्यवाही नहीं हुई को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि पत्रकार की सुरक्षा के प्रति प्रशासन तनिक भी गंभीर नही है। प्रशासन इस देश के चौथे स्तंभ के बारे में क्या सोचता है। पत्रकार से वार्ता करने पर मिली जानकारी के अनुसार पत्रकार ने बताया कि हम निःस्वार्थ देश सेवा करते हैं। भारत सरकार हमें किसी प्रकार का कोई सुरक्षा प्रबंध या हमारे चैनल से ना हुआ तो हम कहां जाएंगे। इसी प्रकार से देश का चौथा स्तंभ टूट जाएगा और देश में जंगलराज एवं गुंडाराज कायम हो जाएगा।

## विद्यालय की प्रबन्ध समिति का चुनाव सम्पन्न

**जहानाबाद, फ्तेहपुर ।** श्रीमती सुशीला देवी आदर्श बालिका इंटर कॉलेज की कार्यकारिणी समिति का चुनाव संपन्न हुआ। चुनाव अधिकारी पूर्व सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य राजाराम यादव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जरारा तथा नियुक्त पर्यवेक्षक रविंद्र सिंह शिक्षक राजकीय विद्यालय चक्की की देखरेख पर चुनाव संपन्न हुआ। जिस पर अध्यक्ष पद पर कुंवर रविंद्र प्रताप सिंह सहित पूरी कार्यकारिणी निर्विरोध निर्वाचित हुई। कुंवर शैलेंद्र प्रताप सिंह उपाध्यक्ष, कुंवर जितेंद्र प्रताप सिंह प्रबंधक एवं स्मृति सिंह उप प्रबंधक सहित पांच पदाधिकारी एवं सात सदस्यों सहित कुल 12 कार्यकारिणी सदस्यों को निर्विरोध घोषित किया गया जिनका कार्यकारिणी सदस्यों ने माला फूल पहनाकर स्वागत किया। इस मौके पर कार्यकारिणी के सदस्य विद्यालय के वरिष्ठ लिपिक इंद्रपाल सहित प्रधानाचार्य मौजूद थी।

## लक्ष्य प्राप्त न करने वाले वीडीओ का कटेगा वेतन

**फ्तेहपुर ।** स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के अंतर्गत एनओएलबी लक्ष्य के सापेक्ष बन रहे व्यक्तिगत शौचालयों का समीक्षा मुख्य विकास अधिकारी सत्य प्रकाश द्वारा की गई। समीक्षा में पाया गया कि 104 ग्राम पंचायतों में लक्ष्य के सापेक्ष 05 प्रतिशत से भी कम जियोटैगिंग हुई है। इस कार्य मे लापरवाही के लिए इन 104 ग्राम पंचायत के सचिवों का एक दिन का वेतन रोकने का आदेश दिया गया और चेतावनी दी कि अगर एक सप्ताह में अपेक्षित प्रगति नही होती है तो नो वर्क नो पे के आधार पर एक दिन का वेतन अदेय कर दिया जाएगा।

## भाजपा के नव मनोनीत वैश्य पदाधिकारियों का किया जाएगा स्वागत

**कल आयोजित होगी वर्चुअल मीटिंग**

**फ्तेहपुर ।** अखिल भारतीय वैश्य एकता परिषद के राष्ट्रीय महासचिव विनोद कुमार गुप्त ने बताया कि 30 अगस्त को शायं चार बजे से परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 सुमंत गुप्त के सानिध्य में वर्चुवल मीटिंग का आयोजन किया गया है। मीटिंग के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी के नव मनोनीत प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ0 सलिल विश्नोई व प्रदेश मंत्री विजय शिवहरे का स्वागत सम्मान समारोह आयोजित किया गया है। गुप्त ने बताया कि भाजपा प्रदेश नेतृत्व ने अभी हाल में प्रदेश कार्यकारिणी का विस्तार करते हुये काफी संख्या में वैश्य समाज के लोगों को महत्वपूर्ण जिम्मेदरियां सौंपी है। जिससे वैश्य समाज में काफी हर्ष की लहर है। नव मनोनीत पदाधिकारियों का परिषद की ओर से सम्मान किया जायेगा। बैठक में प्रदेश सहित पूरे राष्ट्र से पदाधिकार जुडेंगे। युवा जिलाध्यक्ष शैलेंद्र शरन सिंपल ने कहा कि वैश्य समाज के कई पदाधिकारियों को प्रदेश भाजपा नेतृत्व ने महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी है।

## कोटेदार की मनमानी के खिलाफ कोराई के ग्रामीणों का प्रदर्शन

**फ्तेहपुर ।** तेलियानी विकास खण्ड के ग्राम कोराई के ग्रामीणों ने जिलाधिकारी को एक शिकायती पत्र सौंपते हुए बताया कि गांव के कोटे में अगस्त माह का अनाज वितरण में अनियमितता व धांधली के संबंध में अवगत कराया। गांव के लोगों का कोटेदार लालती देवी के कार्ड धारकों का अनाज वितरण देवदत्त के कोटे से संबंध कर दिया गया है किंतु कोटेदार देवदत्त ने अगस्त माह का आनाज कार्ड धारकों को यह कहकर सभी को वापस कर दिया कि अनाज सब बांट दिया गया है। साथ यह भी कह दिया कि जिस से भी मेरी शिकायत करना है, कर दीजिएगा और कार्ड धारक गल्ला ना मिलने पर परेशान हैं। कार्ड धारक के पास अनाज ना होने के कारण वे भुखमरी की कगार पर हैं। सरकारी गल्ले से ही लोगों के खाने-पीने का चलता काम जिलाधिकारी से कहा कि ऐसी कुछ व्यवस्था की जाए कि कार्ड धारको का अनाज आसानी से मिल जाए। साथ ही कोटेदार देवदत्त के खिलाफकड़ी से कड़ी जांच कराकर उचित कानूनी कार्रवाई की जाए। इस मौके पर रामखेलावन, रामजियावन, हंसराज, घनश्याम और संगीता देवी, रुबीना बानो, सिद्धि पालो, पारुल सिंह, दिनेश, संतोषी देवी, धनपतिया देवी, सीता देवी, श्यामा देवी, नरेश, श्रीमती देवी, गीता देवी, सूरजपाल, ज्ञानमती, शिवेंद्र कुमार, सीमा देवी, अरुण कुमार, कुसुम कली, विजय सिंह, कमलेश, कैलाशिया देवी, मधु, रामपति, नीलम देवी, रवि कुमारी, रूप रानी देवी, पुष्पा देवी, कल्पना देवी, विमल रामपति, अपर्णा देवी, भोला, श्यामा देवी आदि ग्रामीण मौजूद रहे।

# राष्ट्रीय भागीदारी पार्टी पी. का छानबे विधानसभा मिर्जापुर में हुआ विस्तार

**प्रयागराज।** राष्ट्रीय भागीदारी पार्टी पी./भागीदारी संकल्प मोर्चा के विस्तार के क्रम में मिर्ज़ापुर के छानबे विधानसभा के दिघुली गांव में जन चौपाल नुक्कड़ बैठक का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय भागीदारी पार्टी पी. राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रेमचंद प्रजापति ने की व बैठक का आयोजन एवं संचालन ओमप्रकाश सिंह पटेल ने किया। इस मौके पर सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान रखते हुए मीटिंग की कार्यवाही की गई। ओम प्रकाश पटेल ने पार्टी के पदाधिकारियों एवं जन समूह का गर्मजोशी से स्वागत किया तथा मीटिंग के उद्देश्य को सामने रखा। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने पार्टी एवं मोर्चा के आगामी रणनीतियों पर चर्चा की और प्रदेश में चल रही वर्तमान जन समस्याओं पर विस्तार से प्रकाश डाला इस दौरान उन्होंने निजीकरण, शोषण आदि मुद्दों को भी मीटिंग में रखा। प्रदेश सचिव विनय कुमार ने सरकार के जनविरोधी नीतियों एवं कार्यों के ऊपर विस्फोटक अंदाज में करारा प्रहार किया। इस अवसर पर ओमप्रकाश सिंह पटेल के परामर्श पर पार्टी अध्यक्ष ने कई पदाधिकारियों की नियुक्ति की। इस प्रकार छानबे विधानसभा में राष्ट्रीय भागीदारी पार्टी ने जोरदार अभियान के तहत काफी लोगों ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। बता दे वर्तमान समय में राष्ट्रीय भागीदारी पार्टी पूरे उत्तर प्रदेश में एक मजबूत पार्टी के रूप में उभरता चला जा रहा है।

## उच्चाधिकारियों के आदेश का क्यों नहीं किया जा रहा पालन?

**चौडगरा, फ्तेहपुर ।** थाना कल्याणपुर अन्तर्गत ग्राम काकराबाद मजरे मौहार में हनुमान जी का सैकड़ों वर्ष पुराना मंदिर स्थापित है जिसमें राम प्रकाश अपने नाम का पत्थर लगा कर कब्जा दिखाना चाहता है, जिसकी सूचना ग्रामीणों ने पुलिस प्रशासन को दिया भी, किन्तु नहीं हुई कोई कार्यवाही। न्याय की गुहार लगाते हुए कमल नयन बाजपेई पुत्र श्रवण कुमार बाजपेई ने उपजिलाधिकारी को सूचना दिया। जिनके आदेशानुसार उपजिलाधिकारी ने थानाध्यक्ष कल्याणपुर से जांच की आख्या मांगी, किन्तु न ही थानाध्यक्ष ने मौके में जाकर निरीक्षण किया और न ही चौकी इंचार्ज चौडगरा ने इस मामले को गंभीरता से लिया। ऐसी स्थिति में न्याय की आशा लेकर पीड़ित आखिर जाए तो जाए कहां? राम प्रकाश ने कुछ ही वर्षो पहले मंदिर कुआ की भूमि को हड़पने के उद्देश्य से अपना निकास द्वार पूरब दिशा की ओर किया है, जबकि पहले राम प्रकाश का दरवाजा उत्तर दिशा की तरफ था। उच्चाधिकारियों को चकमा देने व सच को छुपाने के उद्देश्य से उत्तर दिशा का निकास द्वार भी बंद किया जा चुका है जिससे मंदिर व कुएं की भूमि को हड़पने में आसानी रहे। मौजूदा जांच अधिकारी लेखपाल रामदत्त शुक्ला को मामले की सारी जानकारी होते हुए भी मंदिर की भूमि के तथ्य को छुपाते हुए सुलभ शौचालय बनाने का आदेश भी पारित कराया गया जो कि मंदिर कुआ की भूमि में बनाया गया है। ग्रामीण भक्तो को आशा है कि न्याय जरूर मिलेगा, किन्तु कब यह कहा नहीं जा सकता।

# सवाल परीक्षा का भी है, और जिंदगी का भी

अखिल भारतीय स्तर पर इंजीनियरिंग में प्रवेश के लिये होने वाली संयुक्त प्रवेश परीक्षा यानी जेईई की मुख्य परीक्षा तथा मेडिकल के लिये होने वाले नेशनल एलिजिबिलिटी व एंट्रेंस टेस्ट यानी नीट की परीक्षा को लेकर विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। जैसे-जैसे परीक्षा की तारीख नजदीक आ रही है, इस मुद्दे पर राजनीति बढ़ती ही जा रही है। इस बीच कई राजनेताओं और राज्य सरकारों के बाद अब चर्चित पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग ने भी भारतीय छात्रों की एनईईटी और आईईटी जेईई परीक्षा को आगे बढ़ाने की माँग का समर्थन किया है। गैर-भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्री इस मुद्दे पर खुलकर सामने आ गये हैं। परीक्षा देने के मसले पर छात्रों की राय भी अलग अलग है। काफी छात्र परीक्षा देना चाहते हैं, वहीं छात्रों का एक वर्ग परीक्षा टालने की मांग कर रहा है। देश में कोरोना का कहर और कुछ राज्यों में बाढ़ का प्रकोप बड़ी परेशानी का कारण है। पूर्व में ये परीक्षाएं दो बार टाली जा चुकी हैं। छात्रों के जीवन के साथ ही साथ सवाल लाखों छात्रों के कैरियर का भी है। जेईई की परीक्षा एक से छह सितंबर तो नीट की परीक्षा 12 सितंबर को होनी है।

छात्रों ने इन दोनों राष्ट्रीय परीक्षाओं के आयोजन की तारीख को आगे बढ़ाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में भी गुहार लगाई थी लेकिन सुप्रीम कोर्ट की ओर से उन्हें किसी तरह की राहत नहीं मिली। शीर्ष अदालत ने कहा कि जीवन चलते रहने का नाम है और छात्रों का एक बहुमूल्य वर्ष नष्ट नहीं किया जा सकता। वहीं दूसरी तरफ परीक्षा आयोजित करने वाली संस्था एनटीए ने जेईई परीक्षा का प्रवेश पत्र भी जारी कर दिया है जबकि नीट का प्रवेश पत्र अभी जारी किया जाना बाकी है। जेईई का प्रवेश पत्र लाखों छात्र डाउनलोड भी कर चुके हैं। देश में यातायात के साधनों की ताजा स्थिति व लॉकडाउन की परेशानी को देखते हुए यह तय किया गया है कि 99 फीसदी छात्रों को उनकी पहली पसंद के शहर में सेंटर मिले।

जेईई और नीट में छात्रों को कोरोना संक्रमण से बचाव और सामाजिक दूरी नियम का पालन करवाने के लिए 40 मिनट के एक स्लॉट में सिर्फ सौ छात्रों को परीक्षा केंद्र में पहुंचना होगा। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने दोनों परीक्षाओं के सुरक्षित और सफल आयोजन की तैयारी पूरी कर ली है। वहीं एनटीए ने जेईई मेन की परीक्षा के लिये परीक्षा केंद्र 570 से बढ़ाकर 660 कर दिये हैं तो नीट की परीक्षा हेतु 2546 के स्थान पर 3843 परीक्षा केंद्र बनाये गये हैं। पहले जेईई की कुल आठ शिफ्ट होती थी, इस बार 12 शिफ्ट हैं। इसके अलावा एक शिफ्ट 1.32 लाख छात्र थे, उसकी बजाय 85 हजार छात्र होंगे। देशभर में जेईई मे महाराष्ट्र का आंकड़ा सबसे अधिक है। परीक्षा में महाराष्ट्र के छात्रों की संख्या सबसे अधिक है। जबकि यूपी दूसरे नंबर पर है। उत्तर प्रदेश के 100706 छात्र जेईई की परीक्षा देंगे। इसके लिए 66 केंद्र बनाए गए हैं। ऐसे ही नीट में 320 परीक्षा केंद्रों में 166582 छात्र परीक्षा देंगे।

समस्या यह है कि कोरोना संकट के चलते परीक्षार्थी मनोवैज्ञानिक दबाव से जूझ रहे हैं। देश में जहां तमाम राज्य बाढ़ से जूझ रहे हैं तो वहीं देश में रेल व बस सेवाएं सामान्य नहीं हो पायी हैं। कई छात्र ऐसे हैं जिन्हें दो सौ-तीन सौ किलोमीटर का सफर तय करके परीक्षा केंद्रों पर जाना है। चिंता इस बात की भी है कि पहले ही लॉकडाउन के कारण आर्थिक संकट झेल रहे लोग निजी वाहनों से परीक्षा केंद्रों तक पहुंच पायेंगे? परीक्षा केंद्र पहुंचने पर उनके ठहरने की व्यवस्था कहां हो पायेगी? क्या वे इस दौरान संक्रमण से सुरक्षित रह पायेंगे? एनटीए ने राज्यों को पत्र लिखा है कि वे छात्रों को परीक्षा केंद्र तक पहुंचने के लिए परिवहन व्यवस्था को सुचारू करें। अभी तक एक भी राज्य सरकार ने बाढग्रस्त क्षेत्रों में परीक्षा कैसे आयोजित होगी पर सवाल नहीं उठाया है।

छात्रों व अभिभावकों की परेशानी से इंकार नहीं किया जा सकता है। जमीनी सच्चाई यह है कि देश में कोरोना का कहर अभी जारी है। प्रतिदिन 50 से 60 हजार नये केस सामने आ रहे हैं। दुनिया में संक्रमण के लिहाज से दुनिया में हम तीसरे नंबर पर खड़े हैं। देश में संक्रमितों की भारी संख्या व मौतों का आंकड़ा छात्रों व अभिभावकों के भय व चिंता का बड़ा बिंदु है। वहीं दूसरी तरफ इस तथ्य से भी मुंह नहीं मोड़ा जा सकता है कि यदि अब परीक्षा न हुई तो छात्रों का एक वर्ष खराब होना लगभग तय है। फिर अगले वर्ष नये बैच के लाखों छात्रों के साथ उन्हें प्रवेश परीक्षा में बैठना होगा। जो अपने आप में एक बड़ी समस्या व छात्रों के लिये तनाव का कारण बनेगा। छात्रों व अभिभावकों का यह भी सोचना होगा कि अगस्त का महीन बीत चुका है। देश के कई विश्वविद्यालयों व कॉलेजों में स्नातक पाठ्यक्रमों में दूसरे साल की पढ़ाई ऑनलाइन माध्यम से शुरू हो चुकी है। ऐसे में सत्र में देरी विलंब छात्रों के लिये नुकसानदायक हो सकता है क्योंकि पहले ही काफी समय निकल चुका है। ऐसे में यदि परीक्षाएं स्थगित होती हैं तो इस सत्र का पाठ्यक्रम पूरा कर पाना संभव नहीं हो पायेगा। चिकित्सा व इंजीनियरिंग जैसे महत्वपूर्ण विषयों में पाठ्यक्रम का बोझ किसी से छिपा नहीं है। बीती 10 अगस्त को ही लखनऊ विश्वविद्यालय ने उत्तर प्रदेश में बीएड की प्रवेश परीक्षा का सफल आयोजन तमाम चुनैतियों के बीच करवाकर मिसाल कायम की है।

छात्रों की सेहत का सवाल सर्वोपरि है। ऐसे में जरूरी है कि संक्रमण से सुरक्षा के लिये फुलप्रूफ उपाय किये जायें। इन परीक्षाओं से लाखों बच्चों के सपने भी जुड़े हैं। यह?भी उचित न होगा कि एक वर्ष देश नये डाक्टरों-इंजीनियरों के भविष्य की बुनियाद रखने से वंचित हो जाये। ऐसे में शीर्ष अदालत की सलाह से सहमत हुआ जा सकता है कि परीक्षा भी हो और हरसंभव सावधानी भी बरती जाये। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने इस संबंध में दिशा-निर्देश जारी भी किये हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि पूरा देश इस समय संकट के समय से गुजर रहा है। कोरोना काल की तमाम चुनौतियों का हम सबको मिलकर मुकाबला करना है। हम सबका और राजनीतिक दलों का प्रयास ये होना चाहिए कि अकादमिक कैलेंडर यूं ही बर्बाद न हो जाय। प्रवेश परीक्षा की प्रक्रिया में रूकावट पैदा करने के दूरगामी बुरे नतीजे सामने आ सकते हैं। लेकिन इस नाजुक मसले को लेकर जिस तरह खुलकर राजनीति सामने आ गयी है। वो छात्रों के भविष्य को संकट में डाल सकती है। बीते बुधवार को कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कांग्रेस शासित राज्यों व पश्चिम बंगाल तथा महाराष्ट्र के मुख्यमंत्रियों के साथ इस मुद्दे पर विरोध जताया और अदालत का दरवाजा खटखटाने की बात की है।

समस्या की गंभीरता और छात्रों के भविष्य के मद्देनजर सरकार ने परीक्षा केंद्रों की संख्या बढ़ाने से लेकर छात्रों की सेहत को लेकर तमाम जरूरी उपाय करने की घोषणा की है। लेकिन विपक्ष के कई राजनीतिक दलों को इस गंभीर समस्या और आपदा काल में अपनी राजनीति चमकाने का अवसर दिखाई दे रहा है। इसलिये वो सरकार के साथ मिल बैठकर समस्या सुलझाने की बजाय छात्रों को भ्रमित करने और भड़काने के उपक्रम में लगे हैं। विपक्षी दलों को छात्रों की परेशानियों को हल करने से ज्यादा ऊर्जा मोदी सरकार को छात्र विरोधी साबित करने में खर्च करते दिख रहे हैं। बेहतर होता कि देश के तमाम राजनीतिक दल आपस में मिल बैठकर लाखों छात्रों के भविष्य से जुड़े इस अहम मुद्दे का सर्वमान्य हल निकालते हैं। लेकिन जब मंशा राजनीति चमकाने की हो तो असल मुद्दे अक्सर दब ही जाते हैं। सरकार को छात्रों की परेशानियों के मद्देनजर हर संभव व्यवस्था और सुविधा प्रदान करनी चाहिए। यहां सवाल छात्रों के भविष्य के साथ ही साथ उनकी जिंदगी का भी है।

# सम्पादकीय

## चीन की बढ़ती गिरफ्त में पाकिस्तान

पाकिस्तान के अंदरूनी हालात बहुत ही खराब हैं. वह अंतरराष्ट्रीय पटल पर भी बिल्कुल अलग-थलग पड़ चुका है. इस समय पाकिस्तान पूर्ण रूप से चीन के प्रभाव में है. चीन जो चाहता है, वे वही करते हैं. यही वजह है कि अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ उनकी दूरी बढ़ती जा रही है. कई देश नाराज हो चुके हैं. यहां तक कि उनके समर्थक रहे सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात (यूएइ) जैसे देश भी दूर हो रहे हैं. सऊदी अरब ने छह बिलियन डॉलर और इसी तरह यूएई ने आर्थिक संकट के दौरान उनकी मदद की थी. वे पाकिस्तान से अब नाराज हो गये हैं. पाकिस्तान को लगता है कि सऊदी अरब से अब उन्हें पैसे नहीं मिलेंगे और दूसरी बात, ये लोग भी इस्लामिक देशों के नेतृत्व का ख्वाब देखने लगे हैं. तुर्की के राष्ट्रपति अर्दोगान के साथ मिलकर ओआइसी में नया गुट बनाने की कोशिश में लगे हैं. ओआइसी कोई विशेष प्रतिनिधित्व वाला समूह नहीं है, बल्कि यह नेताओं का एक क्लब है, जिसमें आकर वे रिजोल्यूशन पास कर देते हैं. उसको कोई देश गंभीरता के साथ लागू भी नहीं करता. पाकिस्तान यह सब करने की कोशिश कर रहा है, जिससे सऊदी अरब इनसे नाराज हो गया है. सऊदी अरब को लग रहा है कि ये लोग उसके हित के बजाय अब चीनी हितों की पैरोकारी कर रहे हैं. अमेरिका भी इस बात से काफी चिंतित है. सऊदी अरब और चीन की भी दूरी बढ़ती जा रही है. चीन दस बिलियन डॉलर का पेट्रो-केमिकल प्लांट सऊदी में लगा रहा था, अब सऊदी अरब ने उससे इंकार कर दिया है. यूएइ भी इनसे खुश नहीं है, वह इजराइल के साथ अपने संबंध बेहतर कर रहा है. सऊदी अरब और यूएइ की पाकिस्तान की फौज पर जो निर्भरता थी, उसे भी धीरे-धीरे वे लोग कम कर रहे हैं. वे सूडान, इजिप्ट आदि देशों से वहां फौजें मंगवा रहे हैं. कहने का तात्पर्य है कि ये पूर्ण रूप से चीन के प्रभाव में हैं और चीन इनका खुलकर इस्तेमाल कर रहा है. पाकिस्तान की सेना और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सेना का अब एक ही लक्ष्य है- भारत विरोधी गतिविधियां. ये लोग भारत के खिलाफ काफी बड़ी प्लानिंग भी कर रहे हैं. अन्य देशों को भी अपने साथ जोड़ने की कोशिश में लगे हैं. मुझे नहीं लगता कि इनका प्रयास सफल होगा, क्यों पाकिस्तान के अंदर के हालात बहुत खराब हैं.चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीइसी) से इन्होंने सोचा था कि इससे पाकिस्तान की सभी समस्याओं का समाधान हो जायेगा और इनकी आर्थिक स्थिति सुधर जायेगी. लेकिन, वह होता नजर नहीं आ रहा है. बलूचिस्तान में लोग उनके खिलाफ हैं, सिंध में आक्रोश है और अब तो खैबर पख्तूनख्वा में भी लोग इन्हें समझने लगे हैं. संयुक्त राष्ट्र में जाकर वे झूठ बोल रहे हैं, उसका वहां कोई असर पड़नेवाला नहीं है. सभी का यही मानना है कि कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है. सऊदी और यूएइ ने भी कह दिया है कि यह भारत का अंदरूनी मामला है. इनके कहने से क्या होगा. वे जमाने से इस तरह की बातें करते हैं. ऐसा करके कश्मीर को अंतरराष्ट्रीय मीडिया में उजागर करने की कोशिश में रहते हैं. वे चाहते हैं कि कश्मीर का मसला बना रहे, उसका बार-बार नाम आता रहे. अब उसे भी समर्थन नहीं मिल रहा है. वे अरबी आदि भाषाओं में वीडियो बनाकर वायरल कर रहे हैं. इसका कोई असर होनेवाला नहीं है और न ही इसे अधिक गंभीरता से लेने की जरूरत है. भारत को बलूचिस्तान और सिंध के लोगों के अभियान को नैतिक समर्थन देना चाहिए. कार्यक्रम, सम्मेलन आदि के माध्यम से मंच उपलब्ध कराना चाहिए, ताकि वे वैश्विक स्तर पर अपनी बातें पहुंचा सकें. इसमें अकेले नहीं, बल्कि अफगानिस्तान और अन्य देशों को भी शामिल करना चाहिए. दूसरी बात कि हमें तालिबान का खुलकर विरोध करना चाहिए, ताकि वह अफगानिस्तान में अपने पैर न जमाने पाये. वहां जो लोकतंत्र है, हमें चाहिए कि हम उसे और मजबूत करें. अगर तालिबानी वहां आते हैं, तो पहले सेना पर कब्जा करेंगे और इस सरकार को खत्म कर देंगे. पाकिस्तान के जब अंदरूनी हालात खराब होते हैं, तो वह कश्मीर का राग अलापने लगता है. भारत को वह अपनी जनता में बड़े खतरे के रूप में दिखाता है. इसके बाद वह सीमा पर फायरिंग शुरू कर देगा. सीजफायर का उल्लंघन करेगा. भारत जब जवाब देता है, तो वह जनता को दिखायेगा कि देखो भारत से हमें खतरा है. वह लोगों का ध्यान भटकाता है. लेकिन, अब उसकी बात वहां काफी लोग समझ चुके हैं. कोरोना महामारी की वजह से उनकी अर्थव्यवस्था और भी खराब होती जा रही है. कब तक वे चीन की मदद पर टिके रहेंगे. चीन की मदद बहुत सीमित है. वहां उद्योग-धंधे चौपट हो चुके हैं और बेरोजगारी चरम पर है, महंगाई बहुत ज्यादा है और खाने-पीने के सामानों के दाम बहुत अधिक हो चुके हैं. एक तरफ सेना का आतंक है, दूसरी तरफ वहां के समर्थक आतंकवादी संगठनों का आतंक है. जहां भी कोई सरकार के खिलाफ बोलता है या लोकतंत्र समर्थन की मुहिम शुरू करता है।

# बिहार को आर्थिक मदद की जरूरत

पिछले विधानसभा चुनाव के प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के लिए 50 हजार करोड़ रुपये के पैकेज का एलान किया था. उसी जुलाई में जम्मू-कश्मीर के लिए एक लाख करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा की गयी थी. स्वाभाविक रूप से यहां यह प्रश्न उठता है कि आखिर क्यों देश के सबसे गरीब व पिछड़े राज्य की तुलना में जम्मू-कश्मीर के लिए दोगुना पैकेज जारी किया गया. बिहार की आबादी जम्मू-कश्मीर की तुलना में कमोबेश दस गुनी है. दरअसल, हमें इस सच्चाई को समझना होगा कि पचास के दशक में घोषित पहली योजना से लेकर आज तक केंद्रीय निधि में वाजिब हिस्सेदारी और अधिकार से बिहार को वंचित रखा गया है. बिहार भारत का सबसे गरीब और पिछड़ा राज्य है. यह देश का एकमात्र ऐसा राज्य है, जहां सार्वभौम गरीबी का स्तर (46-70 प्रतिशत) उच्चतम है. बिहार की वार्षिक प्रति व्यक्ति आय 3,650 रुपये है, जो राष्ट्रीय औसत 11,625 रुपये का एक तिहाई है. बिहार की बहुसंख्य आबादी (52.47 प्रतिशत) अशिक्षित है. इसके अलावा अन्य समस्याएं भी गंभीर हैं. लेकिन इस राज्य का दूसरा पहलू भी है. यहां शिशु मृत्यु दर प्रति 1000 पर 62 है, जो राष्ट्रीय औसत 66 से कम है. यह भी दिलचस्प है कि इस राज्य का शिशु मृत्यु दर उत्तर प्रदेश (83) और ओडिशा (91) से केवल बेहतर ही नहीं है, बल्कि आंध्र प्रदेश और हरियाणा (66-66 प्रतिशत) से भी बेहतर है. इतना ही नहीं, बिहारी पुरुष की जीवन प्रत्याशा 63.6 वर्ष है, जो भारतीय पुरुष की औसत जीवन प्रत्याशा (62.4 वर्ष) से बेहतर है. बिहार में 70.4 लाख हेक्टेयर कृषि भूमि है और इसकी उपज प्रति हेक्टेयर 1,679 किलोग्राम है, जो राष्ट्रीय औसत 1,739 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर से कम है. हालांकि, यह आंकड़ा छह अन्य राज्यों, जिसमें बड़े खेतिहर राज्य कर्नाटक और महाराष्ट्र भी शामिल हैं, उनसे बेहतर है. ये आंकड़े राज्य की सकारात्मक उपलब्धि और संभावना की ओर इंगित करते हैं. इन सबके बावजूद सामाजिक-आर्थिक मामलों में बिहार की स्थिति दयनीय है. फिर यहां यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि ऐसा क्यों है? पिछले कुछ वर्षों के दौरान देश का प्रति व्यक्ति विकास व्यय 7,935 रुपये की तुलना में, बिहार का प्रति व्यक्ति विकास व्यय 3,633 रुपये ही रहा है, जो राष्ट्रीय औसत के आधे से भी कम है. हालांकि यह कई कारकों पर निर्भर करता है, जिसमें राष्ट्रीय खजाने में राज्य का योगदान भी शामिल होता है. इस राज्य में 10वीं योजना का प्रति व्यक्ति व्यय 2,533 रुपये रहा, जो गुजरात (9,289.10 रुपये), कर्नाटक (8,260 रुपये) और पंजाब (7,681.20 रुपये) की तुलना में एक तिहाई से भी कम था. माना कि अब योजना आयोग नहीं है, लेकिन नीति आयोग तो है. लेकिन अब कौन सी नीति है इस संबंध में? जब कोई क्षेत्र तेजी से पिछड़ रहा हो, तो विकास के लिए बड़े निवेश की आवश्यकता होती है. परिवार में कमजोर या बीमार बच्चे के लिए अधिक देखरेख की जरूरत होती है. केवल जंगल राज हम कमजोर और दुर्बल को नजरअंदाज कर योग्यतम की उत्तरजीविता देखते हैं. आर्थिक-सामाजिक दशा के आधार पर बिहार को अतिरिक्त मदद से ही नहीं, बल्कि उसके उचित अधिकार से भी वंचित रखा गया. प्रति व्यक्ति निवेश की दयनीय स्थिति से यह स्पष्ट है कि केंद्र सरकार द्वारा ऐतिहासिक रूप से व्यवस्थागत ढंग से राज्य को वांछित निधि से वंचित रखा गया. लंबे अरसे तक केंद्र सरकार के साथ राजनीतिक तालमेल के अभाव की कीमत भी बिहार को चुकानी पड़ी. यह अवधि 1992 से 2004 तक रही. बीते कुछ वर्षों से केंद्र की सरकार में बिहार और सत्तारूढ़ गठबंधन शामिल है तथा इसके बारे में यह माना जाता है कि वह राज्य को लेकर सहयोग का रुख रखती है. यह स्पष्ट है कि केंद्र के साथ राजनीतिक तालमेल वाले राज्य केंद्रीय मदद के मामले में बेहतर स्थिति में हैं. राजनीतिक तौर पर केंद्र के करीबी रहे आंध्र प्रदेश ने पिछले कुछ वर्षों में बेहतर विकास किया है. केंद्र से मिलनेवाले ऋण के मामले में भी बिहार को नजरअंदाज किया गया. बिहार में राज्य सरकार के चार प्रमुख विकास योजनाओं में निवेश तुलनात्मक तौर पर कम रहा. बिहार में सड़क पर प्रति व्यक्ति व्यय मात्र 44.60 रुपये रहा, जो राष्ट्रीय औसत (117.80 रुपये) का मात्र 38 प्रतिशत है. इसी तरह बिहार का सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण पर प्रति व्यक्ति खर्च 104.40 रुपये रहा, जबकि राष्ट्रीय औसत 199.20 रुपये है. दसवीं पंचवर्षीय योजना में प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय औसत के हिसाब से बिहार का हिस्सा 48,216.66 करोड़ होना चाहिए, जबकि उसे 21,000.00 करोड़ ही आवंटित किया गया. इस चलन की शुरुआत पहली पंचवर्षीय योजना में ही हो गयी थी. अभी संचयी कमी 80,000 करोड़ से अधिक की है यानी इतनी अतिरिक्त राशि पर उसका दावा बनता है. यदि प्रचलित राष्ट्रीय ऋण जमा अनुपात लाभ को देखें, तो बिहार को बैंकों से क्रेडिट के तौर पर 44,830 करोड़ मिलना चाहिए था, जबकि वास्तव में इस राज्य को केवल 5,635.76 करोड़ ही मिला. इसी तरह वित्तीय संस्थाओं से बिहार को मात्र 551.60 रुपये प्रति व्यक्ति अनुदान मिला, जबकि राष्ट्रीय औसत 4,828.80 रुपये प्रति व्यक्ति है. इससे स्पष्ट है कि बिहार में शायद ही कोई औद्योगिक गतिविधि हो रही है. नाबार्ड द्वारा कम निवेश के लिए कोई बहाना नहीं है. यह कोई तर्क नहीं है कि बिहार में कोई कृषि कार्य नहीं हो रहा है. अगर वित्तीय संस्थान प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय औसत के हिसाब से निवेश करें, तो राज्य को 40,020.51 करोड़ रुपये प्राप्त होंगे. जबकि सच्चाई यही है कि राज्य को 4,571.59 करोड़ ही मिले. इन बातों से पता चलता है कि बिहार का केवल हक ही नहीं छीना गया, बल्कि इस सबसे पिछड़े राज्य से पूंजी का निकास भी हुआ. यह एक क्रूर विरोधाभास है. इस पूंजी द्वारा अन्य क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों का वित्त पोषण किया गया और वहां उच्च कर व्यवस्था के साथ केंद्रीय मदद भी मुहैया करायी गयी. थोड़ी कड़ी भाषा में कहें, तो केंद्रीय निधि में वाजिब अधिकार से वंचित कर बिहार को व्यवस्थागत तरीके से विकसित नहीं होने दिया गया. अभी केंद्र द्वारा जो मदद मिली है, उसे दोगुना करने की आवश्यकता है, ताकि यह राज्य राष्ट्रीय विकास में अपना समुचित योगदान दे सके।

# हिमालय को तबाह करने की हर साजिश को नाकाम किया जाना चाहिए

अपने कालजयी महाकाव्य कुमारसंभव में महान कवि कालिदास ने पहला ही श्लोक हिमालय की महिमा में लिखा है। लिखते हैं कि अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजरू। पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य, स्थित पृथिव्या इव मानदण्डः दुर्भाग्य की बात यह है कि आज इस देवतात्मा ,नगाधिराज और पृथ्वी के मानदंड को हम वह सम्मान नहीं दे पा रहे हैं जो उसे वास्तव में मिलना चाहिए। हिमालय को पृथ्वी की बहुत नई पर्वत श्रृंखला माना जाता है। भारत के लिए तो हिमालय जीवनदायी है। गंगा और यमुना समेत बहुत सारी नदियां हिमालय से निकलती हैं। प्रगति के नाम पर में समय-समय पर सरकारें हिमालय को नुकसान पहुंचाती रहती हैं। केदारनाथ में प्रकृति के क्रोध और तज्जनित विनाशलीला को दुनिया ने देखा है। उसके पहले उत्तरकाशी में एक भूकम्प के चलते पहाड़ के दुर्गम इलाकों से किसी तरह का संपर्क महीनों के लिए रुक गया था। समय-समय पर हिमालय से प्रेम करने वाले और दुनिया भर के पर्यावरणविद चिंता जताते रहते हैं लेकिन कोई ख़ास फर्क नहीं पड़ता। गंगा और हिमालय की रक्षा के लिए बहुत सारे महामना संतों ने अपने जीवन का बलिदान भी किया है। लेकिन आजादी के बाद से ही हिमालय के दोहन की प्रक्रिया शुरू हो गई है जो अभी तक जारी है। इस कड़ी में नवीनतम श्विकास का प्रोजेक्टश् चारधाम परियोजना है। पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट के संज्ञान में आया था कि सड़क यातायात और हाईवे मंत्रालय की चार धाम परियोजना के कारण हिमालय की जंगलों और वन्यजीवन को भारी नुकसान हो रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने सही जानकारी के लिए रवि चोपड़ा की अगुवाई में एक हाई पावर कमेटी नियुक्त किया था। उसकी दो रिपोर्टें आ चुकी हैं। कमेटी की राय में उत्तराखंड में चल रही चार धाम परियोजना के कारण हिमालय के पर्यावरण को भारी नुकसान हो रहा है। जिसके दूरगामी परिणाम बहुत ही भयानक होंगे। इस कमेटी ने पर्यावरण मंत्रालय से तुरंत कार्रवाई करने की मांग की है। कमेटी की रिपोर्ट किसी भी पर्यावरण प्रेमी को चिंता में डाल देगी। रवि चोपड़ा ने पर्यावरण मंत्रालय को लिखा है कि वहां अंधाधुंध पेड़ काटे जा रहे हैं, पहाड़ को तोड़ा जा रहा है। बिना किसी सरकारी मंजूरी के जगह-जगह खुदाई की जा रही है और कहीं भी मलबा फेंका जा रहा है।चारधाम परियोजना के तहत उत्तराखंड राज्य के प्रमुख धार्मिक केन्द्रों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए करीब सौ किलोमीटर की सड़क तैयार करने की योजना है। हिमालय के पर्यावरण को बिना कोई नुकसान पहुंचाये इस महत्वाकांक्षी योजना को पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था लेकिन वहां तो मनमानी चल रही है। उच्च अधिकार प्राप्त कमेटी ने आगाह किया है कि इस मनमानी को फौरन रोकना पड़ेगा। 2017 से ही बिना अनुमति लिए पेड़ों की कटाई का सिलसिला जारी है। जब यह बात वहां के अखबारों में छप गई तो 2018 में राज्य सरकार से बैक डेट में अनुमति ली गई। रिपोर्ट में लिखा है कि चारधाम प्रोजेक्ट प्रधानमंत्री की एक महत्वाकांक्षी और महत्वपूर्ण योजना को लागू करने के लिए शुरू किया गया है। परियोजना के ड्राफ्ट में बहुत साफ बता दिया गया है कि हिमालय के पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा। लेकिन जो हो रहा है वह फारेस्ट एक्ट और एन जी टी एक्ट का सरासर उल्लंघन है। कानून और सरकारी आदेशों को तोड़ा-मरोड़ा भी खूब जा रहा है। रक्षा मंत्रालय के सीमा सड़क संगठन ने 2002 और 2012 के बीच कोई आदेश दिया था। उसी के सहारे बड़े पैमाने पर पहाड़ों को तबाह किया जा रहा है जबकि उस आदेश में इस तरह की कोई बात नहीं थी। राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड के दिशानिर्देशों की भी कोई परवाह नहीं की जा रही है। केदारनाथ वन्यजीव अभयारण्य, राजाजी नेशनल पार्क और फूलों के घाटी के इलाके में हिमालय को भारी नुकसान पहुंचाया जा रहा है। सबको मालूम है कि हिमालय के पर्यावरण की रक्षा देश की सबसे बड़ी अदालत की हमेशा से ही प्राथमिकता रही है।लेकिन यह भी देखा गया है और चारधाम परियोजना में भी देखा जा रहा है कि सुप्रीम कोर्ट की मंशा को तोड़-मरोड़कर अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने वाले बिल्डर-ठेकेदार-नौकरशाह-नेता माफिया कोई न कोई रास्ता निकाल लेते हैं। ऐसी हालत में उत्तराखंड के आज के प्रभावशाली नेताओं को राजनीतिक पार्टियों की सीमा के बाहर जाकर काम करना होगा। मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र रावत, सांसद अनिल बलूनी, पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत जैसे नेताओं की अगुवाई में पहाड़ की राजनीतिक बिरादरी को आगे आना चाहिए और अपने संरक्षक हिमालय की रक्षा के लिए जरूरी राजनीतिक प्रयास करना चाहिए। सत्ता और राजनीतिक पार्टी तो आती-जाती रहेंगी लेकिन अगर हिमालय को नुकसान पहुंचाने का सिलसिला जारी रहा तो आने वाली इन लोगों को पीढ़ियां माफ नहीं करेंगी। यही चेतावनी मैंने 2013 में उत्तराखंड के तत्कालीन मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा को भी दी थी। वे उन दिनों कांग्रेस में थे। जून 2013 की बाढ़ को ठीक से संभाल नहीं पाए थे। उनकी चौतरफा आलोचना हुई थी। उसी सिलसिले में उनको मुख्यमंत्री पद भी गंवाना पड़ा था। उम्मीद की जानी चाहिए कि विजय बहुगुणा वाली गलतियां आने वाले समय में कोई भी सरकार न करने पाए। हिमालय की अनदेखी जब-जब नेताओं ने की है उसका नुकसान निश्चित रूप से हुआ है। मुझे उत्तरप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री हेमवतीनंदन बहुगुणा का वह इंटरव्यू कभी नहीं भूलता जो उन्होंने 1974 में उस वक्फ्त की सम्मानित हिंदी समाचार पत्रिका दिनमान को दिया था। टिहरी बांध की प्रस्तावना बन चुकी थी। उनका वह इंटरव्यू टिहरी बांध के बारे में ही था। उत्तराखंड का गठन नहीं हुआ था, वह उत्तरप्रदेश में ही था। इंटरव्यू की हेडलाइन लगी थी कि श्जब टिहरी का पहाड़ डूबेगा तभी पहाड़ों की तरक्की होगी।श् उस वक्फ्त के भूवैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों ने हेमवतीनंदन बहुगुणा के उस बयान पर सख्त टिप्पणियां की थीं लेकिन सत्ता बहुत मतवाली होती है। किसी की कोई भी चेतावनी काम न आई। हिमालय के मूल निवासियों के हितों को नजरअंदाज करके, दिल्ली और लखनऊ में बैठे भाग्यविधाता लोग गंगा के आसपास के हिमालय की प्रलयलीला पर दस्तखत करने के लिए मजबूर होते रहे हैं।

## सार समाचार .....

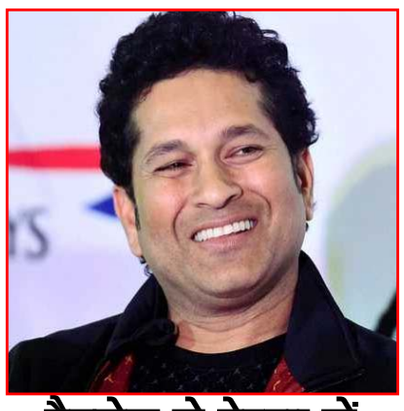

### ब्रैडमेन से प्रेरणा लें खिलाड़ी : सचिन

नयी दिल्ली **एजेंसी।** कोरोना महामारी के कारण जबर्दस्ती मिले ब्रेक से कई खिलाड़ी भविष्य को लेकर चिंतित हैं, लेकिन चैंपियन क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने उन्हें सर डॉन ब्रैडमेन से प्रेरणा लेने की सलाह दी है। ब्रैडमेन 1939 से 1945 के बीच दूसरे विश्व युद्ध के कारण कई साल क्रिकेट नहीं खेल सके थे, लेकिन इसका उनके प्रदर्शन पर असर नहीं पड़ा। उन्होंने अपने कैरियर में 52 मैचों में 99.94 की औसत से रन बनाये। तेंदुलकर ने ब्रैडमेन की 112वीं सालगिरह पर ट्विटर पर उन्हें याद करते हुए लिखा,'सर डॉन ब्रैडमेन दूसरे विश्व युद्ध के कारण कई साल क्रिकेट से दूर रहे, लेकिन उनका बल्लेबाजी औसत फिर भी सर्वोच्च रहा।' उन्होंने कहा,'लंबे ब्रेक और अनिश्चितता के कारण आज खिलाड़ी चिंतित हैं और ऐसे में ब्रैडमेन उनके लिये प्रेरणा हो सकते हैं। जन्मदिन मुबारक हो सर डॉन।' कुछ समय पहले पीटीआई से बातचीत में उन्होंने इस ब्रेक को लेकर 90 के दशक की भी याद दिलाई थी। उन्होंने कहा था ,'मार्च 1994 से अक्तूबर 1995 के बीच करीब 18 महीने हमने बहुत कम टेस्ट खेले थे। उस समय तीन से चार महीने का ब्रेक आम बात होती थी और श्रीलंका में गर्मियों में दौरे पर जाने पर कई मैच बारिश में धुल जाते थे।' गौरतलब है कि पिछले 5 महीने से कोई क्रिकेट मैच नहीं हुआ है। क्रिकेट खिलाड़ी मैदान से दूर हैं। ऐसे में कई खिलाड़ी इतने लंबे समय से क्रिकेट से दूर रहने के कारण चिंतित हैं।

### टी-20 किंग क्रिस गेल खेली ऐसी जबरदस्त पारी

**नई दिल्ली एजेंसी।** एक तो टी-20 क्रिकेट का सबसे बड़ा स्कोर और ऊपर से सबसे तेज शतक का रिकॉड. ऐसे दो-दो कारनामे एक ही दिन में करते हुए कैरेबियाई तूफान क्रिस गेल ने पूरे वर्ल्ड से अपने लिए टी-20 क्रिकेट के यूनिवर्स बॉस का खिताब हासिल किया था. गेल ने 23 अप्रैल 2013 के दिन इंडियन प्रीमियर लीग में 66 गेंद में नाबाद 175 रन की पारी से कुछ ऐसे रिकॉर्ड बनाए थे, जिनके आसपास भी कोई दूसरा बल्लेबाज तो छोड़िए वे खुद भी दोबारा नहीं पहुंच पाए हैं. आईपीएल में क्रिस गेल को सबसे तूफानी बल्लेबाज माना जाता रहा है. उनके नाम पर 300 से ज्यादा छक्का मारने वाला अकेला बल्लेबाज होने से भी उनका यह खिताब पुख्ता होता है. लेकिन 23 अप्रैल, 2013 के दिन तो यह तूफान अपने चरम पर था. क्रिस गेल ने आईपीएल-2013 में विराट कोहली की कप्तानी वाली आरसीबी के लिए पुणे वारियर्स के खिलाफ बंगलूरु के एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में रनों की रिकॉर्ड तोड़ बौछार लगा दी थी. ओपनिंग करने के लिए उतरे गेल ने इस पारी में सिर्फ 30 गेंद में अपना शतक पूरा कर लिया था, जो आज तक वर्ल्ड में किसी भी तरह की टी-20 क्रिकेट के मैच में सबसे तेज शतक का रिकॉर्ड है. क्रिस गेल इस पारी में आखिरी गेंद तक नॉटआउट रहे और जब पारी खत्म होने पर मैदान के बाहर पवेलियन के लिए लौटे तो स्कोर बोर्ड पर उनके नाम के आगे चमक रहे थे महज 66 गेंद में नॉटआउट 175 रन. उनका बनाया यह स्कोर भी आज तक पूरे वर्ल्ड की टी-20 क्रिकेट में किसी भी बल्लेबाज की सबसे बड़ी पारी है. उनके महज 66 गेंद में इतने रन बनाने से अंदाजा लगाया जा सकता है कि किस कदर बल्लेबाजी का तूफान उस दिन एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में दर्शकों को देखने को मिला होगा. अपनी इस पारी के दौरान क्रिस गेल ने दौड़कर रन लेने से ज्यादा ध्यान चौके और सिक्सर लगाने पर दिया था. उन्होंने अपनी इस 66 गेंद की पारी में 13 चौके लगाए तो छक्कों की संख्या 17 रही. एक पारी में 17 छक्कों की संख्या आज भी एक टी-20 पारी में किसी एक बल्लेबाज के छक्के लगाने का रिकॉर्ड है, जिसे कोई बल्लेबाज नहीं तोड़ पाया है. गेल ने अपनी इस पारी के दौरान 13 चौके और 17 छक्कों के चलते कुल 154 रन बाउंड्री शॉट से बनाए थे. आज तक आईपीएल तो छोड़िए वर्ल्ड के किसी अन्य टी-20 क्रिकेट टूर्नामेंट या सीरीज के दौरान किसी एक मैच में कोई बल्लेबाज बाउंड्री शॉट से इतने रन नहीं बना पाया है. इस मामले में गेल के बाद दूसरे नंबर पर न्यूजीलैंड के ब्रैंडन मैकुलम का नाम है, जिन्होंने साल 2008 में आईपीएल के पहले ही सीजन के उद्घाटन मैच में केकेआर की तरफ से रॉयल चैलेंजर्स बैंगलौर के ही खिलाफ अपनी 158 रन की पारी में 118 रन बाउंड्री शॉट्स से बनाए थे. मैकुलम ने इस पारी में 10 चौके और 13 छक्के लगाए थे. क्रिस गेल की धुआंधार पारी की मदद से आरसीबी ने भी आईपीएल इतिहास के सबसे बड़े स्कोर का रिकॉर्ड बनाया था. टीम ने 20 ओवर में 5 विकेट पर 263 रन बनाए थे, जिसमें गेल के बाद दूसरे सबसे बड़े स्कोर तिलकरत्ने दिलशान के 33 रन और एबी डिविलियर्स के 31 रन थे. गेंदबाजों की धुनाई का आलम इस कदर था कि मिचेल मार्श ने सिर्फ 3 ओवर में 56 रन और अली मुर्तजा ने 2 ओवर में 45 रन दे दिए थे. आरोन फिंच के तो एक ही ओवर में टी-20 किंग गेल ने 29 रन ठोक दिए थे।

# सचिन तेंडुलकर, एमएस धोनी और विराट कोहली की श्रेणी जॉइन करना सम्मान की बात- खेल रत्न मिलने पर बोले रोहित शर्मा

**दिल्ली | एजेंसी।**

टीम इंडिया में सीमित ओवर के उपकप्तान रोहित शर्मा ने कहा कि उनके लिए यह सम्मान की बात है कि उन्हें इस साल राजीव गांधी खेल रत्न पुररस्कार- देश के सवोच्च खेल पुरस्कार से नवाजा जा रहा है। रोहित शर्मा और टेबल टेनिस स्टार मनिका बत्रा, रेसलर विनेश फोगाट, पैरालिंपियन मरिप्पन थंगावेलू और भारतीय हॉकी टीम की कप्तान रानी रामपाल को इस साल खेल रत्न पुरस्कार के लिए चुना गया है। इन खिलाड़ियों को 29 अगस्त को होने वाले नैशनल खेल पुरस्कार समारोह (वर्चुअल) में इस अवॉर्ड से सम्मानित किया जाएगा। कोविड- 19 के कारण यह पुरस्कार समारोह पहली बार ऑनलाइन आयोजित किया जा रहा है। बीसीसीआई ने रोहित शर्मा का एक वीडियो अपने ट्विटर अकाउंट पर पोस्ट किया है।

इस वीडियो में रोहित खुद को देश के सर्वोच्च खेल पुरस्कार से सम्मानित किए जाने के ऐलान पर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। अपने इस संबोधन में उन्होंने यह वादा किया अपना ऐसा प्रदर्शन जारी रखेंगे, जो देश को खुशियां दे। रोहित सीमित ओवर फॉर्मेट में टीम इंडिया का अहम हिस्सा हैं, जो निरंतरता के साथ टीम के लिए रन बना रहे हैं। 2019 वर्ल्ड कप में रोहित के शानदार परफॉर्मेंस के बाद इस साल के लिए उनके नाम को इस प्रतिष्ठित अवॉर्ड के चुना गया। इस टूर्नमेंट में वह सर्वाधिक (648) रन बनाने वाले बल्लेबाज थे, जिसमें उनके रेकॉर्ड 5 शतक शामिल थे। इस सम्मान को हासिल करने वाले रोहित देश के चौथे क्रिकेटर बनेंगे। उनसे पहले यह पुरस्कार सचिन तेंडुलकर, एमएस धोनी और विराट कोहली को मिल चुका है। रोहित ने कहा कि वह इस विशिष्ट लिस्ट में अपना नाम पाकर खुद को बेहद सम्मानित महसूस कर रहे हैं, जहां पहले से ही तीन महान क्रिकेटर शामिल हैं। इस 33 वर्षीय बल्लेबाज ने कहा, देश के सबसे बड़े खेल पुरस्कार मिलने की बात सुनकर अच्छा महसूस हो रहा है। इस अवॉर्ड को पाकर मैं बहुत, बहुत खुश और गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। मैं खेल मंत्री और बीसीसीआई को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने इस अवॉर्ड के लिए मुझे चुना। मैं वादा करता हूं कि ऐसे ही कड़ी मेहनत करता रहूंगा, जिससे मेरे देश के लिए और ट्रोफियां जीत सकूं। इस शानदार ग्रुप का हिस्सा बनना लाजवाब है- यहां जिन तीन महान खिलाड़ियों (सचिन, धोनी और विराट) के नाम पहले से ही मौजूद हैं, वे देश के लिए कई अचरज भरे काम कर चुके हैं, जिससे देश को खूब खुशी मिली। ऐसी लिस्ट में शामिल होना बड़े सम्मान की बात है। मैं बहुत खुश हूं। इस अवॉर्ड को मिलने की खुशी जताते हुए रोहित ने अपने फैन्स और परिवार का शुक्रिया अदा किया। उन्होंने कहा कि आप सभी के प्यार और दुआओं के बिना यह संभव नहीं था।

## मैनचेस्टर में दिखेगी इंग्लैंड और पाकिस्तान की जंग

नई दिल्ली **एजेंसी।** लाल बॉल के संग्राम के बाद इंग्लैंड और पाकिस्तान की टीम सफेद बॉल के फटाफट क्रिकेट फॉर्मेट टी-20 इंनटरनेशनल में आपसी टक्कर के लिए तैयार है. इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच 3 टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की सारीज का का पहला मुकाबला 28 अगस्त यानी आज खेला जाएगा. एक तरफ पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम एंड कंपनी टेस्ट सीरीज की हार का बदला लेने मैदान पर उतरेगी. तो वहीं दूसरी और इयोन मोर्गन के नेतृत्व में इंग्लैंड की टीम टेस्ट सीरीज की तरह पाक टीम को हार का मुंह दिखाना चाहेगी. ये पहला टी-20 मैच भारतीय समयानुसार रात 10:30 बजे मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड मैदान पर खेला जाना है. बेशक पाकिस्तान की टीम टेस्ट सीरीज में इंग्लैंड के सामने हार गई हो. लेकिन मेजबान पाक टीम को हल्के में लेने की कोशिश न करें क्योंकि पाकिस्तान अपने खेल से इस फॉर्मेट में सबको हैरान करने वाली टीम है. ऐसे में इंग्लैंड बनाम पाक के बीच होने वाले मैनचेस्टर टी2-0 में कांटे का मुकाबला देखने को मिल सकता है. इसके साथ बाबर आजम खुद टी20आई के नंबर एक बैट्समैन हैं, ऐसे में बाबर की अगुवाई में पाकिस्तान टीम इंग्लैंड पर पलटवार करती दिखाई दे सकती है. दूसरी ओर इंग्लैंड ने हाल ही में आयरलैंड के सामने वनडे सीरीज जीती है लेकिन इंग्लिश टीम को आखिरी वनडे में आयरलैंड के हाथों मिली हार से काफी आलोचना सहनी पड़ी थी. ऐसे में इस पहले टी20आई मे इंग्लैंड एक संतुलित टीम के साथ उतरना चाहेगी. टी20 इंटरनेशनल में इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच अब तक कुल 15 मुकाबले खेले गए हैं. जिनमें इंग्लैंड का पलड़ा काफी भारी है. यही कारण है कि इंग्लिश टीम ने इन 15 मैचों में से 10 मैच अपने नाम किए हैं. दूसरी और महज 4 मुकाबले पाकिस्तान के खाते में गए हैं. जबकि एक टी20 ड्रॉ रहा है. इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच आखिरी टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच पिछले साल मई में खेल में खेला गया था. जिसमें इंग्लैंड ने पाकिस्तान को 7 विकेट से मात दी थी। **इंग्लैंड टीम-** इयोन मोर्गन (कप्तान), जॉनी बेयरस्टो (विकेटकीपर), सैम बिलिंग्स, टॉम बैंटन, जो डेनली, डेविड विली, डेविल मलान, मोइन अली, टॉम कुरेन, आदिल रशीद, क्रिस जॉर्डन, सकीब मोहम्मद और लुइस ग्रेगरी। **पाकिस्तान टीम-** बाबर आजम (कप्तान), मोहम्मद रिजवान (विकेटकीपर), मोहम्मद हफीज, शोएब मलिक, फखर जमां, हैदर अली, शादाब खान, इमाद वसीम, मोहम्मद आमिर, शाहीन अफरीदी, वहाब रियाज, नसीम शाह, शरफराज अहमद, खुशदिल शाह, इफ्तिकार अहमद और मोहम्मद हसन।

## गेंद पर पसीने का इस्तेमाल रोकेगा आस्ट्रेलिया

**साउथम्पटन , एजेंसी।** क्रिकेट आस्ट्रेलिया (सीए) ने कोरोना संक्रमण के फैलने के जोखिम को कम करने की कोशिश में इंग्लैंड के खिलाफ सीमित ओवरों की शृंखला के दौरान गेंद को चमकाने के लिये अपने खिलाड़ियों को सिर, चेहरे और गर्दन से पसीने के इस्तेमाल से रोक दिया है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने महामारी से बचने के लिये अंतरिम स्वास्थ्य सुरक्षा के लिये गेंद पर लार के इस्तेमाल को प्रतिबंधित कर दिया है। हालांकि खिलाड़ी शरीर पर कहीं से भी पसीने का इस्तेमाल कर सकता है और गेंद पर लगा सकता है, लेकिन सीए इस वायरस के फैलने के किसी भी जोखिम को कम करने के लिये सतर्कता बरत रहा है। क्रिकेट डॉट कॉम डॉट यू के अनुसार बोर्ड की चिकित्सा सलाह के आधार पर उसने अपने खिलाड़ियों को कहा कि वे मुंह या नाक के पास से पसीने का इस्तेमाल नहीं करें। इससे खिलाड़ियों के पास चार सितंबर से साउथम्पटन में इंग्लैंड के खिलाफ होने वाली शृंखला के दौरान पेट या कमर के पास से ही पसीने के इस्तेमाल का विकल्प बचता है। टीम के मुख्य तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क को लगता है कि इससे सीमित ओवरों के प्रारूप में ज्यादा असर नहीं पड़ेगा। स्टार्क ने कहा कि सफेद गेंद की क्रिकेट में यह इतना अहम नहीं है। एक बार नयी गेंद से खेलना शुरू होता है तो आप इसे सूखा रहने की कोशिश करते हो। यह लाल गेंद की क्रिकेट में ज्यादा अहम होता है। इंग्लैंड के खिलाड़ी वेस्टइंडीज और पाकिस्तान के खिलाफ शृंखला के दौरान अपनी पीठ और माथे से पसीने का इस्तेमाल करते हुए दिखायी दिये थे।

## रोहित-ईशांत सेरेमनी में नहीं ले पाएंगे हिस्सा

**नई दिल्ली , एजेंसी।** इस बार के खेल रत्न विजेता टीम इंडिया के सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा और अर्जुन अवॉर्ड विनर तेज गेंदबाज ईशांत शर्मा इस समय आईपीएल खेलने के लिए यूएई जा रखे हैं इसलिए दोनों खिलाड़ी 29 अगस्त को होने वाले राष्ट्रीय खेल पुरस्कार सेरेमनी में शामिल नहीं हो पाएंगे। इसके अलावा बैडमिंटन खिलाड़ी सात्विक साइराज रांकिरेड्डी समेत इस साल राष्ट्रीय खेल पुरस्कार पाने वाले तीन खिलाड़ी कोरोना वायरस जांच में पॉजिटिव पाए जाने के बाद 29 अगस्त को ऑनलाइन समारोह में हिस्सा नहीं ले सकेंगे।

पुरस्कारों के इतिहास में पहली बार कोरोना वायरस महामारी के कारण यह समारोह ऑनलाइन आयोजित किया जाएगा। भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) ने बताया कि 74 विजेताओं में से 65 इस समारोह में शामिल होंगे। साइ के बयान के अनुसार ,इस साल सात श्रेणियों में 74 पुरस्कार दिए जाएंगे। इनमें से 65 विजेता समारोह में शामिल होंगे जबकि नौ पुरस्कार विजेता अलग अलग कारणों से इसका हिस्सा नहीं बन पाएंगे

इनमें से कोई पृथकवास पर है, कोई कोरोना पॉजिटिव पाया गया है तो कोई देश से बाहर है। इसमें कहा गया कि तीन पुरस्कार विजेता कोरोना पॉजिटिव होने के कारण भाग नहीं ले सकेंगे। सभी केंद्रों को सैनिटाइज किया गया है और सामाजिक दूरी सुनिश्चित करने के लिए सारे बंदोबस्त किए जा रहे हैं।

## अमेरिका में नस्लवाद पर विरोध के बीच F1 का बहिष्कार नहीं करेंगे लुईस हैमिल्टन

**छह बार के एफवन चैंपियन और इस खेल में एकमात्र अश्वेत ड्राइवर हैमिल्टन ने कहा कि वह बहिष्कार का समर्थन करते हैं लेकिन यूरोप में इस तरह का विरोध का खास प्रभाव नहीं पड़ेगा।**

**दिल्ली | एजेंसी।**

अमेरिका में अश्वेत जैकब ब्लैक के खिलाफ पुलिस कार्रवाई को लेकर विभिन्न खेलों के खिलाड़ी भले ही मैच नहीं खेल रहे हैं लेकिन फॉर्मूला वन चैंपियन लुईस हैमिल्टन ने साफ किया है कि वह रविवार को होने वाली बेल्जियम ग्रां प्री का विरोध नहीं करेंगे। अश्वेत युवक पर बेहद करीब से पुलिस की गोलीबारी का अमेरिका में विभिन्न खेलों के खिलाड़ी विरोध कर रहे हैं जिसके कारण विभिन्न पेशेवर लीग के मैच रद्द या स्थगित करने पड़े। छह बार के एफवन चैंपियन और इस खेल में एकमात्र अश्वेत ड्राइवर हैमिल्टन ने कहा कि वह बहिष्कार का समर्थन करते हैं लेकिन यूरोप में इस तरह का विरोध का खास प्रभाव नहीं पड़ेगा। हैमिल्टन ने कहा कि सबसे पहले तो अमेरिका में खिलाड़ी अपने खेलों के अंदर जो कदम उठा रहे हैं वह अविश्वसनीय है। इतने अधिक लोग खिलाड़ियों के साथ खड़े हैं और बदलाव पर जोर दे रहे हैं।

उन्होंने कहा कि लेकिन वह अमेरिका में हो रहा है और मैं नहीं जानता कि अगर मैं यहां ऐसा करता हूं तो इससे मदद मिलेगी। हम बेल्जियम में हैं अमेरिका में नहीं। हैमिल्टन शुरू से ब्लैक लाइव्स मैटर अभियान को भी समर्थन देते रहे हैं।

## ट्रिनिबागो की लगातार पांचवीं जीत जॉक्स की जीत में चमके मोहम्मद नबी

**नई दिल्ली | एजेंसी।** ट्रिनिबागो नाइटराइडर्स ने लगातार पांचवीं जीत दर्ज करके कैरेबियाई प्रीमियर लीग (सीपीएल) क्रिकेट टूर्नामेंट में अपना विजय अभियान जारी रखा जबकि मोहम्मद नबी ने अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी करते हुए सेंट लूसिया जॉक्स को छह विकेट से जीत दिलाई। ट्रिनिबागो ने एक कम स्कोर में वाले मैच में गयाना अमेजन वॉरियर्स को सात विकेट से हराया। उसने अभी तक अपने सभी पांचों मैच जीते हैं। वॉरियर्स की टीम पहले बल्लेबाजी का न्यौता मिलने पर सात विकेट पर 112 रन ही बना पाई। नाइटराइडर्स ने दस गेंद शेष रहते हुए तीन विकेट पर 115 रन बनाकर जीत दर्ज की। वारियर्स के चार बल्लेबाज ही दोहरे अंक में पहुंचे जिनमें से कीमो पॉल (नाबाद 28), शिमरोन हेटमायर (26) और रॉस टेलर (26) भी शामिल हैं। नाइटराइडर्स की तरफ से खारी पियरे ने 18 रन देकर तीन विकेट लिए। नाइटराइडर्स ने लक्ष्य का पीछा करते हुए पहले पांच ओवर में बिना किसी नुकसान के 32 रन बनाए लेकिन इमरान ताहिर ने लेंडल सिमन्स (19) ओर कोलिन मुनरो (शून्य) को लगातार गेंदों पर आउट कर दिया। डेरेन ब्रावो (नाबाद 26) ने उनकी हैट्रिक नहीं बनने दी। दस ओवर के बाद नाइटराइडर्स का स्कोर दो विकेट पर 51 रन था और इसके बाद टियोन वेबस्टर (27) भी पवेलियन लौट गए। ऐसे में टिम सीफर्ट ने नाबाद 39 रन की पारी खेलकर टीम को जीत दिलाई। एक अन्य मैच में नबी ने 15 रन देकर पांच विकेट लिए और सेंट लूसिया जॉक्स को सेंट कीट्स एवं नेविस पैट्रियट पर छह विकेट से जीत दिलाई। पैट्रियट की टीम ने निर्धारित 20 ओवरों में नौ विकेट पर 110 रन बनाए। जॉक्स ने 32 गेंद शेष रहते आसान जीत दर्ज की। नबी ने पैट्रियट का शीर्ष क्रम लड़खड़ा दिया जिससे स्कोर चार विकेट पर 11 रन हो गया। बेन डंक (33) और अल्जारी जोसेफ (नाबाद 21) के प्रयासों से ही टीम तिहरे अंक में पहुंच पाई। जॉक्स के सामने छोटा लक्ष्य था जिसे उसने रकीम कार्नवॉल (26), रोस्टन चेज (नाबाद 27) और नजीबुल्लाह जादरान (33) के प्रयासों से आसानी से हासिल कर दिया।

## बॉब और माइक ब्रायन की दिग्गज जोड़ी ने टेनिस को अलविदा कहा

**नयी दिल्ली , एजेंसी।** अमेरिका की बॉब और माइक ब्रायन की दिग्गज टेनिस जोड़ी ने गुरुवार को इस खेल को अलविदा कह दिया। युगल में रिकॉर्ड सफलता हासिल करने वाली जुड़वां भाइयों ने अमेरिकी ओपन के लिए अपना नाम नहीं दिया था जिससे लगभग स्पष्ट हो गया था कि वे टेनिस को अलविदा कह रहे हैं। ब्रायन बंधुओं ने एक साथ 16 ग्रैंडस्लैम खिताब, 119 टूर स्तर के खिताब के अलावा 2012 में ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता। इन दोनों एटीपी युगल रैंकिंग में 10 सत्र का अंत शीर्ष जोड़ी के रूप में किया और 2007 में अमेरिका को डेविस कप जिताने में भी उनकी अहम भूमिका रही। दोनों भाई 42 साल के हैं। कैलीफोर्निया में जन्मे ब्रायन बंधु पहले ही कह चुके थे कि 2020 एटीपी टूर पर उनका अंतिम सत्र होगा। माइक ने कहा कि हमें लगता है कि यह खेल को छोड़ देने का सही समय है। अमेरिकी ओपन ने पिछले हफ्ते प्रविष्टियों की जो सूची जारी की थी उसमें ब्रायन बंधुओं का नाम नहीं था। इस जोड़ी ने अमेरिकी ओपन में एक साथ पांच युगल खिताब जीते।

# रिया चक्रवर्ती की मौत के बाद छवि बिगाड़ने पर बौखलाई कंगना रनौत,ट्वीट कर निकाली भड़ास

अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत केस को लेकर बॉलीवुड क्वीन कंगना रनौत सोशल मीडिया पर काफी ज्यादा एक्टिव हैं। वहीं सुशांत डेथ केस में इसकी मुख्य आरोपी रिया चक्रवर्ती ने पहली बार एक निजी चौनल को इंटरव्यू दिया है। इस इंटरव्यू में रिया ने अपने ऊपर लगे सभी आरोपों के बारे में खुलकर बातें कीं। वहीं इस दौरान रिया ने कई बातें ऐसी भी बोलीं हैं जो बहुत से लोगों को हजम नहीं हो रहा। अब ऐसे में भला कंगना रनौत कहां शांत बैठने वालों में से हैं तो बस एक्ट्रेस ने रिया द्वारा कही गयी बातों का जवाब अपने ट्वीट के माध्यम दिया है। बता दें कि रिया ने अपने इस इंटरव्यू में सुशांत की एक्स गर्लफ्रेंड अंकिता लोखंडे के बारे में बातें करते हुए कहा कि उन्हें सुशांत के बारे में कैसे पता जब वो पिछले चार साल से उनसे किसी टच में नहीं हैं। इतना ही नहीं रिया ने अंकिता के उस घर का भी जिक्र किया जिसके बारे में कहा जा रहा था कि सुशांत पैसे भर रहे थे। रिया की इन बातों का अंकिता ने जवाब देते हुए सोशल मीडिया पर एक पोस्ट किया और बताया कि जब तक वह उनके साथ थीं और वो मानसिक तौर पर बिल्कुल भी बीमार नहीं थे। अब फिर कंगना ने भी अपने ट्वीट में रिया पर जमकर अपना गुस्सा निकाला है। कंगना रनौत ने अंकिता के इस ट्वीट को रीट्वीट करके लिखा-फैक्ट यह है कि पिछले साल रिया के साथ डेटिंग शुरू होने से पहले सुशांत के मानसिक बीमार होने की कोई पुष्टि नहीं की गयी है। यह मानसिक बीमार वाला प्लॉट यूरोप ट्रिप पर उड़ान भरने में डर लगने वाले जीनियस प्लॉट के बाद गॉथ होटेल में रचा गया। कौन है यह बकवास स्क्रिप्ट राइटर?बताते चलें कि सुशांत सिंह राजपूत केस में रिया चक्रवर्ती समेत 6 मुख्यारोपी हैं और इन पर लगे आरोपों की जांच अब सीबीआई द्वारा की जा रही है। वहीं सुशांत सिंह राजपूत केस में सीबीआई ने आज रिया चक्रवर्ती को डीआरडीओ गेस्ट हाउस बुलाया है।

# सुशांत के पिता-बहन से मिले रामदास आठवले, बोले-एक्टर की हत्या में हो सकता है रिया का हाथ

केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले ने शुक्रवार को सुशांत सिंह राजपूत के पिता केके सिंह और बहन रानी से मुलाकात की। आठवले ने सुशांत सिंह राजपूत के परिवार से हरियाणा के फरीदाबाद में मुलाकात की, जहां उनके पिता इन दिनों रह रहे हैं। रामदास आठवले ने उनसे मुलाकात कर दिलासा दिया कि उनके साथ न्याय होगा। आठवले करीब आधे घंटे तक सुशांत के परिवार के साथ रहे और बातचीत की। वहीं परिवार से मुलाकात के बाद आठवले ने कहा कि शक है कि सुशांत की हत्या हुई है। साथ ही उन्होंने कहा कि रिया चक्रवर्ती पर सवाल उठाते हुए कहा कि सुशांत की हत्या के पीछे उसका हाथ हो सकता है। आठवले ने मीडिया से कहा कि मैंने पहले ही आशंका जताई थी सुशांत सिंह की हत्या हो सकती है क्योंकि उसको किसी तरह की कोई कमी या परेशानी नहीं थी तो वो आत्महत्या क्यों करेगा। आठवले ने कहा कि हम सुशांत के परिवार के साथ हैं। हम उनके दुख में शामिल हैं। पूरा देश उनके साथ है...। जिन लोगों ने सुशांत को खुदकुशी के लिए मजबूर किया।

# शाहरुख खान की कॉमिक ड्रामा में हुई आलिया भट्ट की सॉलिड एंट्री

बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान और आलिया भट्ट ने 2016 में एक यादगार फिल्म डियर जिंदगी दी है। इस फिल्म में एसआरके ने काउंसलर की भूमिका निभाई थी, जबकि आलिया फैंसकी मदद के लिए एक कॉर्ड का सहारा ले रही थीं। तब से कई लोग स्क्रीन पर वापस आलिया और शाहरुख को एक साथ देखना चाहते हैं। इसके बीच खबरें आ रही हैं कि आलिया और एसआरके वास्तव में एक प्रोजेक्ट के लिए साथ आ सकते हैं, लेकिन इस बार किंग खान एक निर्माता के रूप में कदम रखेंगे। मिड-डे की एक रिपोर्ट के अनुसार, एसआरके के प्रोडक्शन हाउस रेड चिलीज एंटरटेनमेंट ने महिलाओं के नेतृत्व वाली कॉमेडी फिल्म का समर्थन करने की प्लानिंग की है और स्क्रिप्ट का पहला नैरेशन आलिया के अलावा और किसी के साथ नहीं हुआ है। रिपोर्ट के अनुसार, आलिया भट्ट ने स्क्रिप्ट को पसंद किया है और इस प्रोजेक्ट को लेने के लिए उत्सुक हैं। हालांकि, यह बताया गया कि आलिया अंतिम स्क्रिप्ट सुनने के लिए इंतजार कर रही हैं और तभी शाहरुख के प्रोडक्शन हाउस के साथ फिल्म साइन करने के बारे में उन्हें फोन किया जाएगा। एक सूत्र ने जानकारी दी, रेड चिलीज एंटरटेनमेंट के रोस्टर पर कई प्रोजेक्ट्स में से एक महिला के नेतृत्व वाली कॉमिक-ड्रामा है। नैरेशन का पहला राउंड आलिया के साथ हुआ है, जिन्होंने इस सब्जेक्ट में अपनी रुचि व्यक्त की है। वह आने वाले महीनों में अंतिम स्क्रिप्ट सुनेंगी। निर्माताओं के पास पहले से ही कुछ निर्देशकों को ध्यान में रखा हुआ है। अगले साल की शुरुआत में फिल्म के फ्लोर पर जाने की संभावना है। खैर, अगर यह सच हो जाता है, तो आलिया और शाहरुख के फैंस के लिए दोनों को इस प्रोजेक्ट पर काम करते हुए देखना काफी एक्साइटेड होगा, लेकिन इस बार शाहरुख खान एक अभिनेता के तौर पर नहीं बाकि एक निर्माता बनकर फिल्म का हिस्सा होंगे। रिपोर्ट में मेंशन किया गया है कि अगर बात बनती है तो फिल्म अगले साल शुरू कर दी जाएगी। इस दौरान आलिया सड़क 2 में आदित्य रॉय कपूर, पूजा भट्ट और संजय दत्त के साथ नजर आएंगी। फिल्म महेश भट्ट द्वारा डायरेक्ट की गई है और 28 अगस्त को डिज्नीप्लस हॉटस्टार पर रिलीज होने के लिए तैयार है।

# रिया के आरोपों पर भड़की सुशांत की बहन श्वेता सिंह

अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत सुसाइड केस में सीबीआई की जांच जारी है और आज सुशांत मामले में पूछताछ के लिए रिया को क्रूक् गेस्ट हाउस बुलाया गया है। वहीं इससे पहले यानी वीरवार की शाम रिया चक्रवर्ती एक निजी चौनल को अपना इंटरव्यू दे चुकीं हैं। ऐसे में एक्टर की बहन श्वेता सिंह कीर्ति ने शुक्रवार तड़के अपने किए कई सारे ट्वीट्स के जरिये रिया चक्रवर्ती को जमकर खरी-खोटी सुनाई। यह सब कुछ श्वेता ने तब किया है जब टीवी पर रिया ने अपना इंटरव्यू दिया। श्वेता का आरोप है कि रिया ने नेशनल मीडिया पर आकर अपनी बातों से सुशांत की छवि को बिगाड़ने का प्रयास किया। इस दौरान श्वेता ने लिखा तुममें हिम्मत है कि तुम मेरे इतने अच्छे भाई के निधन के बाद नेशनल मीडिया पर आकर उसकी धज्जियां उड़ा रही हो। तुम्हें क्या लगता है तुम जो ये सब कर रही हो उसे भगवान नहीं देख रहा है,मैं भगवान पर यकीन रखती हूं और मुझे उन पर भरोसा है, अब मैं वाकई में देखना चाहती हूं कि वह तुम्हारे साथ क्या करते हैं। इसके अलावा श्वेता ने ये भी बताया कि विदेश से वापस आने के बाद भी उनकी मुलाकात भाई सुशांत से नहीं हो पाई, क्योंकि वो रिया से मिलने चंडीगढ़ चला गया था। रिया का कहना है सुशांत के अपने परिवार के साथ शुरू से ही खराब रिश्ते थे। कम उम्र में सुशांत के पिता ने उन्हें छोड़ दिया था। मेरे सुशांत की जिंदगी में जाने से पहले तक वह पांच साल से अपने पिता से नहीं मिले थे। यहां तक कि मुझे पता नहीं था कि सुशांत की एक बहन मुंबई में भी थी,उनकी बहनें लोग सुशांत से मिलने आते थे और एक दिन भी नहीं रुकते थे।बता दें,रिया चक्रवर्ती ने इंटरव्यू के दौरान खुद पर लग रहे तमाम आरोपों पर सफाई पेश की है। साथ ही उन्होंने सुशांत के साथ अपने रिश्ते को लेकर बोला वो उन्हें बहुत पसंद करती थीं और सुशांत दुनिया के सबसे अच्छे इंसान थे।

# रिया चक्रवर्ती के मीडिया ट्रायल पर स्वरा भास्कर ने कहा- अजमल कसाब के साथ भी इतना नहीं हुआ होगा

सोशल मीडिया पर इस समय बॉलीवुड एक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती चर्चा का विषय बनी हुई हैं। सुशांत सिंह राजपूत की गर्लफ्रेंड रिया चक्रवर्ती के खिलाफएक्टर के पिता केके सिंह ने उनके मौत के मामले में एफआईआर कराई थी। उसके बाद से केस में कई खुलासे और एंगल सामने आते जा रहे हैं। फिलहाल सुशांत सिंह राजपूत के मौत के केस की जांच सीबीआई, ईडी और एनसीबी कर रही हैं। दरअसल एनसीबी इसलिए इस मामले का हिस्सा बनी हैं क्योंकि ड्रग्स माफिया का एंगल भी सामने आया है और इसमें रिया के होने के सबूत मिला है। रिया को लेकर कई तरह की खबरें सोशल मीडिया से लेकर टीवी चौनल्स में चल रही हैं। अब रिया को लेकर इन खबरों पर फिल्म एक्ट्रेस स्वरा भास्कार ने नाराजगी जताई और कहा कि कसाब के साथ तो ऐसा नहीं किया गया था। ट्विटर पर स्वरा भास्कर ने ट्वीट करते हुए लिखा, मुझे नहीं लगता है कि कसाब भी मीडिया पर इस तरह का पंजबी भ्नदज का विषय रहा होगा। जिस तरह रिया चक्रवर्ती मीडिया ट्रायल को झेल रही हैं। शर्म आनी चाहिए भारतीय मीडिया... इस विषैल जहरीले हिस्टीरिया को ग्रहण करने वाली टॉकसिक जनाता पर हमें शर्मा आती है।इससे पहले भी रिया चक्रवर्ती का सपोर्ट भी स्वरा भास्कर ने किया था। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट की सुनावाई से पहले कहा था कि, रिया एक अजीबो-गरीब और खतरनाक मीडिया ट्रायल का शिकार हैं, जिसकी अगुवाई एक भीड़तंत्र से हो रही है। उम्मीद करती हूं कि सम्माननीय सुप्रीम कोर्ट इस पर ध्यान देगी और फर्जी न्यूज फैलाने वालों और साजिशों की कहानियां बनाने वालों पर रोक लगेगी। कानून को तय करने दीजिए। सीबीआई सुशांत केस की जांच इस समय कर रही है। जबकि इस केस की जांच प्रर्वतन निदेशायल पैसों के एंगल को देखते हुए जांच कर रही है। हालांकि अब नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो ने भी केस इस मामले में ड्रग्स का एंगल आने के बाद दर्ज कर लिया है और जांच में जुट गयी है।

# रिया चक्रवर्ती ने वीडियो शेयर करके कहा- मेरे परिवार की जान को है खतरा

सुशांत सिंह राजपूत की मौत केस में एक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती मुख्य आरोपी के तौर पर उभर कर आ रही हैं। दरअसल इस मामले में बीते दिनों से उनके खिलाफकई हैरान करने वाले खुलासे सामने लगातार हो रहे हैं। हाल ही में इंस्टाग्राम पर एक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती ने वीडियो साझा करते हुए कहा है कि उनको और उनके परिवार को जान से खतरा है। वीडियो में देखा जा सकता है कि एक शख्स कैमरे से घिरा दिखाई दे रहा है। रिया ने वीडियो में कहा कि उनके पिता वह हैं। पुलिस से रिया ने अपने और परिवार के लिए सुरक्षा मांगी है। उन्होंने बताया है कि जांच एजेंसियों को सहयोग वह घर से बाहर निकलकर नहीं कर पा रहे। रिया ने अपनी इंस्टाग्राम पोस्ट में लिखते हुए कहा, यह मेरी बिल्डिंग के अंदर का कम्पाउंड है। वीडियो में दिखाई दे रहे व्यक्ति मेरे पिता इंद्रजीत चक्रवर्ती (रिटायर्ड आर्मी अफसर) है। हम घर से बाहर निकलकर सीबीआई और ईडी और कई जांच अधिकारियों को सहयोग करने की कोशिश कर रहे हैं। मेरी और मेरे परिवार की जान को खतरा है। हमने लोकल पुलिस स्टेशन में सूचना दी है और वहां गए भी थे, कोई मदद नहीं दी गई है। हमने इनवेस्टिगेशन अथॉरिटीज से भी मदद के लिए कहा लेकिन कोई नहीं आया। यह परिवार कैसे जी पाएगा? हम सिर्फमदद मांग रहे हैं ताकि कई एजेंसीज से उसमें मदद कर पाएं, वे जो हमसे चाहते हैं। मैं मुंबई पुलिस से दरख्वास्त करती हूं कि हमें सुरक्षा दें ताकि हम जांच एजेंसियों को सहयोग कर सकें। इसके साथ ही एक और वीडियो रिया चक्रवर्ती ने पोस्ट किया जिसमें उनकी बिल्डिंग का गार्ड राम नजर आ रहा है। वीडियो में उन्होंने यह आरोप लगाया कि उनके साथ भी मारपीट मीडियावाले लगातार कर रहे हैं। इस वीडियो में रिया ने लिखा कि बच्चे और बुजुर्ग भी उनकी बिल्डिंग में रहते हैं और सुरक्षा की मांग उन्होंने की है। सुशांत सिंह राजपूत की मौत का मामले की जांच फिलहाल सीबीआई और ईडी कर रही है। ड्रग को लेकर रिया के कुछ चौट्स निकले हैं जिसके बाद यह पता चला है कि ड्रग डीलिंग में भी उनका हाथ हो सकता है। ड्रग डीलिंग को लेकर रिया, उनके भाई शौविक कई अन्य लोगों के खिलाफनारकोटिक्स ब्यूरो ने केस दर्ज कर लिया है। ड्रग की डीलिंग इस मामले में सामने आते ही नारकोटिक्स टीम भी एक्शन में आ गयी है। मुंबई के लिए नारकोटिक्स की टीम गुरुवार सुबह को ही दिल्ली से रवाना हो गयी थी। इस मामले में वह रिया से पूछताछ कर सकते हैं। मीडिया में हाल ही में रिया के कुछ चौट्स सामने आये थे। रिपोर्ट्स के अनुसार, यह उनके डिलीट मेसेजज थे जिन्हें ईडी ने दोबारा रिकवर किया है। ड्रग्स के बारे में बात जया साहा, सैमुअल मिरांडा और दीपेश सावंत से इन मेसेजज में रिया बात करती नजर आई। जबकि यह भी खबरें आ रही हैं कि सुशांत को ड्रग्स भी वह दे रही थीं। अब रिया पर सुशांत के पिता केके सिंह ने भी आरोप लगाते हुए कहा कि उनके बेटे की रिया हत्यारी है। उन्हें जहर वह लंबे वक्त से दे रही थी। उसको सजा होनी चाहिए।

# दिसम्बर से तेजस की ड्यूटी पर होंगी कंगना रनौत, एयरफोर्स पायलट बनकर भरेंगी आसमान में उड़ान

अपनी अगली फिल्म तेजस के साथ जल्द ही आसमान की उड़ान भरने वाली हैं कंगना रनौत। जी हां, कंगना की यह मोस्ट अवेटेड फिल्म जल्द शुरू होगी, जिसकी जानकारी खुद ऐक्ट्रेस ने दी है। इसी के साथ कंगना ने अपनी इस फिल्म का एक नया पोस्टर भी लॉन्च किया है। कंगना ने सोशल मीडिया पर अपनी इस अगली फिल्म को लेकर अनाउंसमेंट करते हुए फिल्म का एक शानदार पोस्टर शेयर किया है। इस पोस्टर में कंगना एयरफोर्स पायलट के लुक में नजर आ रही हैं। पायलट बनीं कंगना तेजस के साथ पोज देती दिख रही हैं। इसे शेयर करते हुए कंगना ने बताया है कि इस फिल्म पर काम ऑफिशाली दिसम्बर में शुरू होगा। इस पोस्ट में कंगना ने लिखा है, श्तेजस दिसम्बर में उड़ान भरने वाला है। इस शानदार कहानी का हिस्सा बनकर गर्व महसूस कर रही हूं, जो कि हमारे साहसी एयरफोर्स पायलट की कहानी है। जय हिन्द! इससे पहले कंगना ने इसी साल फरवरी में फिल्म का फर्स्ट लुक शेयर करते हुए बताया था कि वह इंडियन एयरफोर्स पायलट की भूमिका निभाने जा रही हैं और उस पहली तस्वीर के साथ ही फिल्म को लेकर फैन्स की उत्सुकता बढ़ गई थी। कंगना का कहना है कि इस फिल्म से हमारे देश के युवाओं को देशभक्ति की प्रेरणा मिलेगी। इसका अलावा कंगना अपनी अगली फिल्म थलाइवी के रिलीज का इंतजार कर रही हैं, जो तमिलनाडु की पूर्व सीएम दिवंगत जयललिता की बायॉपिक है।

# सुहाना खान की आंखों से निकले टपटप आंसू

बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान की लाडली बेटी सुहाना खान ने हाल ही में अपनी कुछ तस्वीरें शेयर कर सोशल मीडिया पर खलबली मचा दी है। दरअसल इन तस्वीरों में सुहाना खान उदास दिख रही हैं और उनकी आंखों से टपटप आंसू भी बह रहे है। ऐसे में सभी ये सोचकर परेशान है कि आखिर सुहाना खान रो क्यों रही है। इतना ही नहीं, शेयर की गई दूसरी तस्वीर में सुहाना खान के चेहरे पर उदासी दिख रही है। सुहाना खान की इन तस्वीरों ने फैंस को ये सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आखिर सुहाना खान को क्या हुआ है। अपनी इन तस्वीरों को शेयर करते हुए सुहाना खान ने लिखा है, 'मुबारक हो, अगर आपने मुझे पहले कभी रोते हुए नहीं देखा हो। क्वारंटाइन फिल्मिंग।' सुहाना खान की ये तस्वीरें आप नीच देख सकते हैं। दरअसल, सुहाना खान ने अपनी इन तस्वीरों को शेयर करते हुए इशारा दिया है कि वो क्वारंटीन के दिनों में किसी शूटिंग में बिजी हैं। बता दे कि सुहाना खान अमेरिका में अपनी पढ़ाई पूरी कर रही है। इसके अलावा वो यहां थियेटर से भी एक्टिंग के हुनर सीख रही है। जिसकी झलक वो अक्सर अपनी सोशल मीडिया के जरिए दिखाती रहती है। सुहाना खान की ये फोटोज दावा करती है कि वो अपने पापा की तरह सुपरस्टार एक्टर बनने की कोशिश में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ना चाहती। अब जब सुहाना खान ये बात साफ कर चुकी है।

कंचन उजाला
हिंदी दैनिक

स्वामी नमोकंचन कार्पोरेट सर्विसेस (एल.एल.पी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कंचन सोलंकी द्वारा उमाकान्ती ऑफसेट प्रेस, ग्राम डेहवा पोस्ट मोहनलाल गंज लखनऊ से मुद्रित एवं 61/18 चुटकी भण्डार हुसैनगंज लखनऊ से प्रकाशित।

संपादक- कंचन सोलंकी

TITLE CODE- UPHIN48974

Mob:
8896925119, 9695670357
Email:
kanchansolanki397@gmail.com

नोटः समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारो एवं लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नही। समस्त विवादो का निस्तारण लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।